पगला घोड़ा

मूल
बादल सरकार

अनुवाद
प्रतिभा अग्रवाल

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली ११०००६ पटना ८००००६

पगला घोड़ा

मूल
बादल सरकार

अनुवाद
प्रतिभा अग्रवाल

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली ११०००६
पटना ८००००६

अनामिका - मच - माला ३

मूल्य : १२.००

प्रथम सस्करण १९७४

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
८, नेताजी सुभाष माग, दिल्ली ११०००६

मुद्रक शान प्रिंटस द्वारा,
अजय प्रिंटस, शाहदरा, दिल्ली ११००३२

पगला घोडा—अनुवादक की दृष्टि मे

गाव का निजन श्मशान, कुत्ते के राने की आवाज, धू धू करती चिता और शव को जलाने के लिए आये चार व्यक्ति—इन्हे लेकर नाटक का प्रारभ होता है। हठात एक पाचवा व्यक्ति भी उपस्थित हो जाता है—जलती हुई चिता से उठकर आयी लडकी जो किसी का प्रेम न पाने की व्यथा को सहने मे असमथ होकर आत्महत्या कर लेती है और जिसके शव को जलाने के लिए मुहल्ले के ये चार व्यक्ति उदारतापूवक राजी हो जाते हैं। अवश्य ही 'विलायती का लोभ भी था। आत्महत्या करनेवाली लडकी के जीवन की घटनाओ की चर्चा करते हुए एक एक करके चारो अपने अतीत की घटनाओ की ओर उन्मुख होते हैं, उन लडकिया के उन घटनाओ के बारे मे सोचने को बाध्य होते है जो उनके जीवन मे आयी थी और जिनका दुखद अवसान उनके ही अन्याय अविचार के कारण हुआ था। आमतौर पर श्मशान वैराग्य की चर्चा सुनी जाती है किन्तु पगला घोडा के चारो पात्र श्मशान मे बठकर अपनी प्रेम कहानियो को दुहराते हैं, उन सुखद दुखद क्षणो मे खो जाते ह जो भले ही उनके जीवन का निर्णायक मोड न रहे हो पर उन लडकियो के जीवन का निर्णायक मोड अवश्य थे जो उन घटनाओ के बाद हताश निराश हो आत्महत्या करती या मत्यु को प्राप्त होती हैं।

किन्तु पगला घोडा' मे नाटककार का उद्देश्य न तो श्मशान की वीभत्सता के चित्रण के द्वारा वीभत्स रस की सृष्टि करना है और न ही अपराध बोध का चित्रण। बादल बाबू के शब्दो मे यह एक मिष्टि प्रेमेर गल्प अर्थात 'मधुर प्रेम-कहानी' है। जलती चिता से उठकर आयी लडकी अपने अशरीरी अस्तित्व को छोड मूत हो उठती है और न केवल स्वय उपस्थित होती है वरन उन चारो को कुरेद-कुरेदकर उन्हे उन क्षणो को पुन जीने के लिए प्रेरित करती है जो उनके प्रेम प्रसगो

वातावरण एवं बातचीत को जबरदस्ती हिन्दी-क्षेत्र के अनुरूप बनाने का प्रयत्न नहीं किया गया है। कुछेक अभिव्यक्तियों को (जैसे तारा मां, श्मशान-काली का प्रसाद, श्मशान गोष्ठी) हिन्दी-क्षेत्र में प्रचलित न होने पर भी ग्रहण किया गया है क्योंकि उनका रूपान्तर संभव नहीं और उनके बदले में सर्वथा कुछ भिन्न अभिव्यक्ति रखने से अनेक उलझनें पैदा हो सकती थीं। शाम के झुटपुटे की रोशनी के लिए बंगला में 'कन देखा आलो' कहकर जिस कोमल और मधुर वातावरण की सृष्टि की जाती है, उसका भी हिन्दी में अभाव है। ऐसे स्थलों पर बंगला का असर यदि बना रह गया है तो अनजाने नहीं वरन् सर्वथा उपयुक्त होने के कारण और इस कारण भी कि उनको बदलना संभव नहीं।

एक और बात—पगला घोड़ा को लेकर बंगला में एक शिशु कविता है जिससे हर बंगाली परिचित है। बादल बाबू ने उस कविता का उपयोग इस नाटक में (और इसके नामकरण में) किया है। यद्यपि बादल बाबू पगला घोड़ा को अपने आप में विशेष महत्व नहीं देना चाहते थे तथापि जाने अनजाने वह इस नाटक में प्रेम का प्रतीक हो उठा है लड़की बार-बार उस पगला घोड़ा से उसके पास न आने की शिकायत करती है। हिन्दी क्षेत्र में यह 'पगला घोड़ा' एक रहस्यमय प्राणी हो गया है, दर्शक बराबर इस प्रतीक के सम्बन्ध में जिज्ञासाएँ व्यक्त करते रहे हैं।

मेरी इच्छा थी कि प्रकाशन के समय हिन्दी के सभी निर्देशकों का वक्तव्य दिया जाय ताकि उन्होंने नाटक में क्या पाया और उसे किस दृष्टि से रूपायित किया इसका परिचय प्राप्त हो सके। खेद है कि अनेक चेष्टाओं के बावजूद केवल श्यामानन्द जालान का वक्तव्य प्राप्त हो सका, अतः वही पुस्तक के साथ जा रहा है। उनका वक्तव्य रोचक होगा, इसका विश्वास है।

पगला घोडा निर्देशक की दृष्टि मे

जब बादल बाबू से पहली बार नाटक सुना था तो लगा था उनके सारे दर्शन, नान और अनुभूतियो के पीछे एक गहरी रूमानियत है और वह रूमानियत सबसे ज्यादा उभरी है इस नाटक मे। नाटक सुनाकर शायद बादल बाबू न स्वय ही कहा था कि यह नाटक एक मीठी प्रेम कहानी है—'प्रेमेर मिष्टि गल्प'।

शुरू शुरू म बडी दिक्कत हुई थी नाटक की परिकल्पना म। एक गाँव का श्मशान, आधी रात, बगल मे चिता पर धू धू जलता एक शव, कुत्ते के रोने की आवाज—ये सब एक ओर इशारा करते थे। पर साथ ही चिता पर लेटी जवान लडकी जो अतृप्त मन लिये आत्महत्या कर लेती है, शराब प्रेम-कहानिया चिता पर से उस लडकी का उठकर आना अर्थी ढोकर लानेवाले चारो आदमियो को छेडना उनके बीच इठलाना—ये सब दूसरी तरफ ध्यान ले जाते थे।

पर अत मे मुझे भी लगा कि बादल दा का कहना ही ठीक है। नाटक वास्तव म प्रेम कहानी है—एक नही चार। और मैंने अपने प्रस्तुतीकरण मे नाटक के उसी पक्ष पर जोर दिया। श्मशान के बीभत्स सकेतो को बिल्कुल दबाकर मैंने रूमानियत को ही उभारा प्यार की रूमानियत, विरह की असह्य यत्रणा की रूमानियत।

दृश्य बध, आलोक, अभिनय सभी मे नाटक की मूलभूत रूमानियत को व्यक्त करने का हमारा प्रयास था।

यो बादल बाबू के कई नाटको मे उनका एक विश्वास बार बार उभरकर आता है जीवन पर विश्वास। वे स्वय कमठ व्यक्ति हैं और इसी म विश्वास करते हैं कि हम एक जीवन मिला है। हमारे पीछे भी एक धुध है सामने भी। हम बस चलना है जीते जाना है। दुख भी हैं सुख भी है। निराशा के गहन अधकार म भी आशा है। मत्यु को खोजना निरथक है। वह जीवन के अस्तित्व को ही नकारना है।

इस नाटक के बारे मे और क्या लिखूं। और क्या है इसमें जो इसको पढकर ही स्पष्ट नहीं हो जाता।

एक बहुत बडा आकर्षण इस नाटक मे और है—मेरे लिए, आपके लिए, अभिनेताओ के लिए। वही यह हम सबको बडा अपना लगता है। नाटक के पांचो पात्रो म हम अपने-आपको किसी न किसी रूप म पाते हैं। नाटक की लडकी का प्यार खोजना, उसके लिए तडपना, भटकना, आज के इस युग के व्यक्तित्व अकेलेपन का तीव्र एहसास है—जो हम बार-बार महसूस करते हैं। कोई अपना नही। अपने भी अपने नही। हम सब कटे-कटे, अकेले। आकाश की सीमाहीनता मे भटकती उल्काए। और जो कही कुछ अपना मिलने की आशा होती है वहां हम उसे आग बढकर ले नही पाते। हमारी कायरता हमारी अकमण्यता और नपुसकता हमारे सामने दीवार खडी कर देती है। और हम फिर दूसरी ओर बढ जात हैं। भटकने, खोजने—उसे जिसे हम खो चुके हैं, तडपने—उसके लिए जो हमे प्राप्त था, पर जिसे हमने स्वय खो दिया।

अपने प्रस्तुतीकरण म मैंने इसी पक्ष पर जोर दिया था। अपनी कायरता के कारण अपनी कमजोरी के कारण अपने पर और किसी ओर पर जो अत्याचार अजाने हुआ उसके लिए पश्चात्ताप मैंने उभारना चाहा। जहां भी मौका मिला, उसी पर जोर दिया। हिमाद्रि सातू कार्तिक, शशि सभी उसी म जलत है और एक जवान लडकी की चिता, उससे उठती भभक शरीर की उन्मुक्तता, अनेक अन्तर की वेदना को उभारकर सामने ले आती है—दैनंदिन जीवन के सयम का तोडकर। और बार-बार मैंने चारो पुरुष चरित्रो के पश्चात्ताप और उनकी वेदना को अतिरजित करके दर्शकों को उन चरित्रो के मानसिक और भावात्मक द्वन्द्व का परिचय देना चाहा। यह प्रयास भी था कि चरित्रो का तडपना कुछ इस तरह हो, इस हद तक हो कि कही वह दर्शकों को कुरेद, कांचे और दर्शक अपने-अपने जीवन की समानान्तर घटनाओ के बारे म सोचने को बाध्य हो।

प्रस्तुतीकरण म हमने पुरुष चरित्रो और उस चिता पर जलती लडकी की आत्मा का अलग अलग स्तरो पर नही रखा था। वह एक साधारण व्यक्ति की तरह मच पर आती थी। पुरुष चरित्रो के पास मँडराती थी, उन्ह छेडती थी। हमने विभिन्न नारी चरित्रो का अभिनय भी केवल एक ही अभिनेत्री से कराया था, जो बार-बार विभिन्न चरित्रो मे, विभिन्न नामो मे, मच पर आती है। ऐसा करने का मुख्य कारण था—सभी स्त्री-चरित्रो की स्थिति की मूलभूत समानता।

हमारा प्रयास यही था कि हम नाटक के मूल कथ्य को जितना सीधा हो सके दर्शकों के सामने रखें—ऐसे रूप में, इस तरह से कि दर्शक उसे ग्रहण कर सकें, उसे अनुभव कर सकें।

—श्यामानंद जालान

मच-सज्जा (खालिद चौधरी)
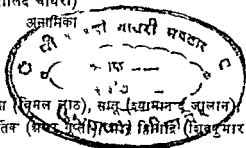
अनामिका

शशि (विमल लाठ), सम्पू (श्यामानन्द जालान), कार्तिक (श्रीपद गुप्ता) और त्रिपाठी (शिवकुमार झुनझुनवाला)

अनामिका

लडकी (यामा अग्रवाल) और
कातिक (आदित्य विक्रम)
अनामिका

लछमी (यामा अग्रवाल) और सातू (श्यामानन्द जालान)
अनामिका

हिमाद्रि (शिवकुमार
भुनभुनवाला) और
मिलि (श्यामा अग्रवाल)
अनामिका

मालती (श्यामा अग्रवाल) और शशि (विमल लाठ)
अनामिका

पगला घोडा का प्रथम मचन अभियान दिल्ली द्वारा सितम्बर सन १९६९ में किया गया। निर्देशक थे श्री टी० पी० जैन और विभिन्न भूमिकाओं में थे सर्वश्री टी० पी० जैन (कार्तिक) श्याम अरोरा (शशि) अशोक सरीन (सातू) सुशील चोपडा (हिमाद्रि) और सुधा शिवपुरी (लडकी)। इसके बाद थियेटर यूनिट बम्बई और अनामिका कलकत्ता द्वारा इसके महत्त्वपूर्ण प्रदर्शन हुए। पगला घोडा का बंगला में प्रथम मचन सन १९७१ में बहुरूपी के तत्वावधान में श्री शभु मित्र के निर्देशन में हुआ। नाटकों के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत इसे समस्त भारतीय भाषाओं में रेडियो से प्रसारित किया जा चुका है।

अनामिका कलकत्ता द्वारा इसका प्रथम मचन मार्च सन १९७१ में हुआ जिसमें सर्वश्री श्यामानद जालान (सातू) आदित्यविक्रम (कार्तिक) विमल लाठ (शशि) शिवकुमार झुनझुनवाला (हिमाद्रि) और मामा अग्रवाल (लड़की) ने अभिनय किया। बाद में अमर गुप्ता (कार्तिक), रवि दवे (शशि) भोलीशकर पचानी (सातू) और वीणा दीक्षित (लडकी) ने भी अभिनय किया। मचसज्जा थी खालिद चौधरी, आलोक थी तापस सेन और निर्देशन थी श्यामानद जालान का था।

दृश्य बंध

पूरे नाटक मे केवल एक दृश्य-बंध है—श्मशान के पास एक कोठरी जिसमे मुर्दा जलानेवाले रहते हैं। इसकी परिकल्पना इच्छानुसार की जा सकती है। एक चौकी, एक चटाई, एक मिटटी का घडा, एक छोटी चौकी, लकडियो का गटठर, एक पेड, आदि वातावरण बनाने के लिए अपेक्षित।

इस्तेमाल मे आनेवाली वस्तुएँ

एक झोला, ह्विस्की की दो बोतलें, चार गिलास, एक जोडी ताश, एक पुडिया जिसमे पाउडर हो।

पात्र

एक महिला (२० २५ वर्ष) एव चार पुरुष।

पगला घोड़ा

प्रथम अंक

कस्बे के बाहर एक श्मशान। शव-यात्रा मे आये लोगो के बठने के लिए एक कोठरी जो मच का आधा हिस्सा घेरे है। कोठरी मे एक बडी चौकी। दो नीचे स्टूल। एक कोने मे कसोरे से ढँका पानी का घडा। पीछे बायीं ओर दरवाजा, उसके बगल मे खिडकी, उसके बाद दीवार घूमकर सामने की ओर आ गयी है मकान की सीमा निर्धारित करती हुई। दाहिनी ओर की जगह मानो कमरे के बाहर है। रात। कमरे मे पेट्रोमक्स जल रहा है। खुली खिडकी। दरवाजे के पीछे दूर कहीं आग जलने का आभास मिल रहा है, लाल रोशनी रह रहकर नाच उठती है। घर के बाहर का हिस्सा। पीछे की ओर एकदम अँधेरा है। पर्दा खुलने पर कोठरी मे चार आदमी बठे ट्वेण्टी नाइन खेल रहे हैं, दो चौकी पर बठे हैं, दो स्टूल पर। एक हाथ खेल होने के बाद बातचीत शुरू होती है।

डिक्लेयर।

चिडी। अरे वाह, डबल की बाजी है याद है न ?

अठारह बोले हो।

ई श शशि दा।

ये रहा।

बस रग खलास ! किस बूते पर चिडी रग लगाया था ऍ ?

बाजी खत्म होती है। कार्तिक गिनता है।

कार्तिक एक एक दो तीन छ छ दो आठ दस बारह तेरह ।
सातू दो काला खोलिए शशि बाबू ।
कार्तिक पाच काला हो गया सातू बाबू । बस एक और खुल जाय तो इन लोगा की काली झडी तैयार ।
शशि एक बार ज़रा देख आया जाता
हिमाद्रि मैं जाता हूँ ।
शशि नही तुम्ही बार बार क्यो जाओ । इस बार मैं जाऊँगा ।
हिमाद्रि तो क्या हुआ ? आप बठिए

हिमाद्रि का प्रस्थान ।

शशि अरे अभी उम्र कम है हम लोगा से कितना छोटा है । दो बार चला ही गया तो क्या हुआ ? हम लोग भी जब उसकी उम्र के थे न तो इसी तरह
सातू कार्तिक बाबू तो ऐसी बात कर रहे हैं जसे इनकी न जाने कितनी उम्र हो गयी हो ! अब तक कितने बसत पार किये हैं आपने, सुनू तो ज़रा।
कार्तिक बहुत सार ।
सातू फिर भी कितने ? पचास ?
कार्तिक पचास ?
सातू अच्छा बाबा, पचास नही तो पचपन, और क्या ?
कार्तिक पचपन ?
सातू माने और ज्यादा ?
कार्तिक जी हाँ ।
हँसकर
नही अभी पिछल फागुन म उनचास पूरा किया है ।
सातू ज़ोर से हँसकर
वाह कार्तिक बाबू वाह ! बसत पार किये उनचास और गुमान इतना ? मैं दो साल पहले उनचास पार कर चुका हूँ ।
शशि मतलब, आप फिफ्टीवन हैं ?
सातू यस सर, फिफ्टीवन । हाफ सनचुरी प्लस वन ।
शशि इमपासिबल ।
कार्तिक आप मुझस बडे हैं ?
सातू लगता तो ऐसा ही है ।

शशि कार्तिक से

सातू बाबू को देखकर कोई कह सकता है कि ये एक्यावन साल के हैं ?

कार्तिक मुझे तो विश्वास ही नही हो रहा है।

सातू कसम स, मैं सच कह रहा हूँ।

शशि मैं तो मानता था कि कार्तिक बाबू आपसे ज्यादा नही तो दस साल तो बडे होंगे ही।

सातू जोर से हँसकर

अरे नही शशि बाबू। रात दिन कुलिया से माथा मारने ही बीत जाता है। सर्दी गर्मी, रात दिन कब आते हैं कब चले जाते है, पता ही नहीं लगता। बुड्ढे होने का समय कहाँ मिला ?

कार्तिक वाह ! वाह ! सातू बाबू ! क्या बात कही है ! लोगो को जैसे मरने की फुरसत नही मिलती वैसे ही सातू बाबू को बुड्ढे होने की फुरसत नहीं मिली।

शशि सच सातू बाबू आपको देखकर मन करता है कि पोस्टमास्टरी छोडकर ठीकेदारी शुरू कर दूं।

सातू शशि बाबू ऐसी सुख की जिन्दगी छोड़कर आपको इस झकमारी का शौक चर्राया ?

शशि अरे झकमारी तो हर कही है। अब देखिए न, हम लोग यहीं पडे सड रहे है और कुछ नहीं तो आप इस बीच न जाने कहाँ-कहाँ घूम चुके हैं, न जाने कितना कुछ देख चुके है। भाई, आप लोगो की लाइफ इंटरेस्टिंग है।

कार्तिक मुझे इंटरेस्टिंग लाइफ का कोई शौक नही है। मैं जैसे हूँ, वसे ही सुखी हूँ।

शशि जी हाँ बडे सुखी हैं। दवा का ठीक माप करते-करते आखो के बारह बज गए है और कमरे के एक कोने म दिन भर स्टूल पर बठे-बठे सारे जोडो को गठिया ने जकड लिया है

कार्तिक अरे भाई कमरे के एक कोने म बैठे-बठे ही कार्तिक कम्पाउण्डर ने बहुत दुनिया देखी है। वह भी कम इंटरेस्टिंग नही। सभी को घूम-फिरकर दवाखाने म हाजिरी देने आना ही पडता है। ठीक वस ही जस सबको एक न एक दिन यहा आना पडता है।

शशि हाँ, आप ही लोग तो यहा के सिंहद्वार है

सातू का अट्टहास !

कार्तिक हा, और ऐसा सिंहद्वार जहा आप सब आते हैं और हँसी-खुशी दक्षिणा भी दे जाते है।

सातू बिलकुल सही बात कह रहे हैं, कार्तिक बाबू—बावन तोले पाव रत्ती सही। पर मैं पिछली बार कब आपके सिंहद्वार पर गया था, याद ही नही पडता। ऐसा मजबूत शरीर पाया है कि बीमारी भीतर घुस ही नही पाती

कार्तिक अहा-हा क्या कहे जा रहे हैं ? ऐसे नही कहते, कौन जाने

सातू अट्टहास

ऐसे कहते नही, ऐसे करते नही, ऐसे देखते नही, ऐसे सुनते नही, ऐस खाते नही ऐसे पीते नही, यह सुनते सुनते कान पक गये कार्तिक बाबू। जब से होश सँभाला, तब से यही सुनता आ रहा हूँ। पर दुनिया मे ऐसा कोई भी काम नही है जो मैंने न किया हो, ऐसा कुछ भी नही है जो मैंने न देखा जाना हो। फिर भी मजे म तो हूँ। कुछ तो नही हुआ।

कार्तिक लीजिए, पीने की बात से याद आयी। सातू बाबू, वो निकालेंगे नही ?

सातू अरे हा !

उठता है

मैं तो भूल ही गया था।

शशि हिमाद्रि के सामने

कार्तिक अहा, हिमाद्रि तो जसे मिट्टी का माधो है।

शशि नही—पर अभी बच्चा है।

कार्तिक बच्चा ?? तीस के आसपास पहुँचा होगा और आप उसे बच्चा-बच्चा कह रहे हैं !

शशि स्कूल टीचर लोग जिन्दगी भर बच्चा ही रह जाते हैं। फिर हिमाद्रि को तो आदश-वादश का रोग भी लगा रहता है न !

सातू हँस पडता है

आदश आदश

शशि हसिए मत सातू बाबू। आदश बडे काम की चीज होती है। मैं भी अपने पास एकाध रख पाता तो

कार्तिक तो रखा क्यो नही ? किसी न मना किया था ?

शशि रखना इतना आसान होता है क्या ? धन-दौलत की तरह इसे भी जमा करके रखना बड़ा मुश्किल होता है।
सातू क्यों, हिमाद्रि बाबू ने कस रखा है ?
शशि हिमाद्रि ने सचमुच रखा है या नहीं, भगवान ही जाने। जबानी जमा-खर्च तो बहुतेरे किया करते हैं।
कार्तिक हटाइए भी ! सातू बाबू निकालिए न बहुत चमचरा कर चुके हम लोग।

सातू उठकर कमरे के कोने में रखे बैग में से ह्विस्की की बोतल और चार गिलास निकालकर लाता है।

वाह वा—विलायती है। कितने दिनों से देखने तक को नसीब नहीं हुई है।
शशि चार गिलासों का क्या कीजिएगा ? क्या सोच रखा है कि हिमाद्रि भी आयेगा ?
सातू अँह, इतना हिसाब कौन लगाता है। चार आदमी थे सो चार गिलास ले आया।
कार्तिक अच्छा किया। कहा नहीं जा सकता। हिमाद्रि को यदि यह विश्वास दिला दें कि हम लोग किसी से इसकी चर्चा न करेंगे तो हो सकता है उसका आदर्श डगमगा भी जाये।
शशि हाँ न। एक भले आदमी को बिगाड़े बिना आप लोगों को चैन नहीं मिल रहा है ?
कार्तिक बिगाड़ने की किसे गरज पड़ी है बाबा ! उससे तो अपना ही घाटा होगा। इसमें से हिस्सा बँट जायेगा।
सातू हिस्सा बँटने की चिन्ता मत कीजिए कार्तिक बाबू।

बैग से एक और बोतल निकालकर दिखलाता है।

कार्तिक यह क्या ? आप एक बोतल और लाये हैं ? अपनी गाँठ से पैसा खर्च करके
शशि हाँ
सातू अट्टहास
पैसा क्या गाँठ में रखने के लिए है शशि बाबू ? आपने ही अभी कहा न कि पैसा रखा ही नहीं जा सकता।
शशि नहीं पर मलिक बाबू ने जब दिया ही था तब

सातू सच पूछिए तो मेरी समझ म नही आ रहा है कि मलिक बाबू ने आखिर बोतल दी क्यो ?

कार्तिक देते न तो क्या करते ? ऐसे ही क्या कोई इस डरावनी रात मे यहा आता ? वाह मजाक है क्या ?

सातू न आता तो न सही, उससे मलिक का क्या बनता बिगडना था ?

शशि और कार्तिक की हँसी ।

कार्तिक आप अभी यहाँ नये नये आए हैं, दिन भर इधर उधर घूमते रहते हैं। आप कैसे कुछ जानेंगे ।

सातू मतलब ? कोई बात है क्या ?

कार्तिक हा सो क्या नही है। कुछ है सातू बाबू, कुछ है। मलिक बाबू का अपना स्वार्थ था इसीलिए उन्होने

सातू स्वार्थ ?

शशि आप उस लडकी को जानते थे ?

सातू ना । मैंने तो पहली बार देखा ।

शशि लडकी कौन थी, उसका क्या किस्सा है यह सब भी न जानते होगे ?

सातू ना। मैं कहाँ से जानगा ?

कार्तिक आपको जब किसी से कुछ मतलब ही नही था तो फिर इतनी रात को निकले क्या ?

सातू वाह निकलता न कैसे। खबर मिली तो फिर आप सब आ रहे थे

कार्तिक अरे साहब मुझे तो विलायती का नशा खीच लाया । और आप—आप खुद गाठ का पैसा खर्च करके एक और बोतल लेकर

शशि सच, आप सारे दिन धूप मे इधर उधर घूमते हैं मेहनत करते हैं। आपको इस समय बुलाकर मैंने भूल की ।

सातू शशि बाबू आप भी

कार्तिक बुलाते न तो क्या करते शशि बाबू ?

शशि हाँ सो भी ठीक ही है। इतनी रात को यहा आने को राजी ही कौन होता । फिर इस लडकी के लिए

सातू इस लडकी के लिए माने यह लडकी कौन है

अचानक अधकार भेद कर लडकी की हँसी सुनाई पडती है। कमरे के बाहर का अंधेरा हिस्सा आलोकित हो उठता है। लडकी के बाल खुले हैं, आंचल कमर मे बंधा है। वह हँसे हो-

जा रही है। कमरे की रोशनी बुझ गयी है तीनों छाया जसे दिख रहे हैं। वे तीनों स्थिर हैं—उनमे से किसी ने लडकी की हँसी नहीं सुनी है।

लडका हँसते हँसते

मैं कौन हूँ ? मैं क्या हू ? मेरा किस्सा क्या है ? तुम लोग नही जानत ? तुम लोग कोई नही जानते ? मैं कौन हू ? मैं क्या हू ? मेरा किस्सा क्या है ?

रोशनी कम होकर एकदम अँधेरा हो जाता है। लडकी का चेहरा, उसकी हँसी अधकार मे विलीन हो जाती है। कमरे मे प्रकाश होता है। ऐसा लगता है जसे बातचीत मे कोई व्यवधान हो न पडा हो।

सातू मेरी समझ म तो कुछ भी नही आ रहा है। यह लडकी

कार्तिक लडकी का बहुत बडा किस्सा है सातू बाबू—बहुत बडा।

शशि मुझे तो लडकी का कोई भी दोप नही लगता।

कार्तिक लडकी का एकमात्र दोप यह था कि वह लडकी थी।

शशि हाँ आप ठीक कहत हैं

सातू आप लोग तो इस किस्स को और भी पेचीदा बनाये जा रहे हैं। लगता है जस इसके पीछे कोई रहस्य है

कमरे मे फिर अँधेरा। बाहर लडकी पर रोशनी।

लडकी किसकी जिदगी म रहस्य नही है ? और किस्सा ? किसकी जिदगी म किस्सा नही है ? तुम ? तुम लोग ? तुम लोगो का कोई किस्सा नही है ? कोई रहस्य नही है ? सब कह डालो न। कहकर जी हल्का कर डालो। देखोगे कि तुम सबका किस्सा एक जैसा ही है—सबका एक जैसा किस्सा मिलकर एकरूप हो जायेगा।

खिलखिलाकर हँस पडती है। रोशनी कम होने लगती है।

तुम लोगो का हम लोगो का सब किस्सा मिलकर एकरूप हो

स्वर विलीन हो जाता है। कमरे मे प्रकाश।

शशि किस्सा हाँ सा क्या नही है।

कार्तिक कोई बात हुए बिना मलिक बाबू यो ही बिलायती बोतल देत ? बस शशि बाबू बोतल के लिए नही आए, यह सही है। हिमाद्रि की तो बात

ही छोड़िए।

शशि देखिए कार्तिक बाबू, मेरा भी कुछ स्वार्थ था तभी आया, यूं ही नहीं। मेरे पास न तो हिमाद्रि की तरह आदर्श है और न सातू बाबू की तरह

सातू वाह, मैं तो आप लोगों की कम्पनी की खातिर आया हूं। यह स्वार्थ नहीं है?

शशि स्वार्थ तो है पर ऊंचे दर्जे का। मेरा स्वार्थ बहुत सीधा-सादा, साधारण सा है। मलिक बाबू को राजी रखने से ट्रांसफर के झमेले से छुट्टी मिल सकती है। पोस्ट आफिस के बड़े अफसरों से उनकी खूब रब्त जब्त है।

सातू आप लोग तो इस तरह कह रहे हैं जैसे अपने अपने स्वार्थ के लिए ही आए हों। स्वार्थ न होता तो ऐसे ही न आते।

कार्तिक ऐसे ही? हुंह यह ब्राह्मन का बेटा तो हरगिज न आता।

सातू आपके कहने का मतलब कि यदि कोई लड़की इस तरह मर जाती ऐसी लड़की जिसका बाप के सिवाय और कोई न हो, और वह भी लकवा का शिकार होकर खाट पकड़े हो तो

शशि सातू बाबू क्या हिमाद्रि की तरह आप पर भी आदर्श का भूत सवार हो रहा है?

सातू हंस पड़ता है। हिमाद्रि का प्रवेश।

सब ठीक है ?

हिमाद्रि हां, अब कुछ देर आराम से निश्चित हुआ जा सकता है।

शशि बैठो—बैठो।

बैठने के लिए बढ़ने पर बोतल गिलास देखकर हिमाद्रि *ठिठक जाता है। फिर बैठता है। कार्तिक शशि की ओर देखकर जरा सा मुसकुरा देता है।*

कार्तिक क्या सातू बाबू, उसे खोलिएगा नहीं?

सातू हां हां, क्यों नहीं?

बोतल खोलकर गिलास में ढालता है।

हिमाद्रि बाबू बुरा मत मानिएगा। सुना, आपको यह सब नहीं चलता

हिमाद्रि नहीं नहीं बुरा मानने की क्या बात है? मेरी मेरी चिन्ता बिलकुल मत कीजिए आप लोग

शशि मैं इतनी नहीं लूंगा।

सातू इतनी कितनी है। शुरू करने से पहले ही ना-ना करने लगे। सोडा तो है नहीं, किसी को पानी चाहिए ?

कार्तिक जी नहीं। पानी मिलाकर मैं इसे चौपट नहीं करना चाहता।

सातू शशि बाबू, आपको ?

शशि नहीं, नीट ही ठीक रहेगी।

सातू वाह, सब एक ही थली के चट्टे बट्टे निकले। यह अच्छी बात है।

कार्तिक हिमाद्रि, जरा सा चखकर देखोगे ?

हिमाद्रि नहीं-नहीं मुझे यह सब नहीं चलता। आप लोग लीजिए।

कार्तिक हम लोग तो लेंगे ही। एक दिन तुम भी जरा चखकर देखते

हिमाद्रि नहीं, मुझे माफ कीजिए।

कार्तिक डरो मत तुम्हारे स्टूडेंटस नहीं जान पायेंगे। और हेडमास्टर साहब को तो कहीं दूर दूर तक पता नहीं चलेगा।

हिमाद्रि नहीं, यह बात नहीं है।

शशि व्यंग्य से

तो फिर क्या बात है ? प्रिंसिपुल का सवाल है ?

हिमाद्रि अचानक सिर उठाकर सीधे शशि की आँखों में देखता है।

हिमाद्रि प्रिंसिपुल भी नहीं शशि बाबू। असल में मुश्किल क्या है कि स्कूल टीचर को देखते के साथ आप लोग उसे सिद्धान्तों का पिशाच मान बैठते हैं।

शशि अरे हाँ तुम यह तो ठीक ही कह रहे हो

सातू तो फिर जरा-सा चखने में क्या हर्ज है ?

हिमाद्रि हर्ज नहीं डर है। स्कूल टीचर का कोई सिद्धान्त न भी हो तो भी उसे उसका खोल तो ओढ़ना ही पड़ता है। [illegible]

कार्तिक तो यहाँ इस एकान्त में [illegible] ?

हिमाद्रि यह कौन कह सकता है [illegible] तक ही बात खत्म हो जायेगी।

सातू यह आप गलत बात [illegible] हिमाद्रि बाबू। [illegible] की आदत नहीं पड़ जाती। [illegible]

हिमाद्रि मेरा मन कितना [illegible] । [illegible] छूट जाना है [illegible] ।

कार्तिक अच्छा, [illegible] ?

हिमाद्रि वहके जा रह हैं ? ह

कार्तिक देखा हिमाद्रि, मुह पर कहना तो नही चाह रहा था पर सारा गाव, बडे बूढे, लडके बच्चे, मास्टर सभी तुम्हारी इतनी तारीफ करते हैं कि

हिमाद्रि हँसकर
कसी तारीफ कार्तिक दा ? मैं गणित अच्छा पढाता हूँ, यही न ?

कार्तिक अरे नही, इससे बहुत ज्यादा । वह सब सुनकर क्या करोगे । पर हाँ, यह सही है कि जिसका मन मजबूत न हो उस इतनी तारीफ नही मिलती ।

हिमाद्रि लोग किसी के बारे म कितना जानते हैं ? भूल से वे जिसे मन की मजबूती मान बैठते हैं वह क्या है जानते ह ? हठ—एक हठी आदमी का जबरदस्त हठ । इसे मैं जितनी अच्छी तरह जानता हूँ उतना और कोई नही जान सकता ।

लडकी फिर हस पडती है—उस पर रोशनी पडती है । कमरे का प्रकाश इस बार जलता ही रहता है ।

लडकी यह हुई न बात । यही तो तुम्हारा किस्सा है यही तुम्हारा रहस्य है वोले जाओ सब लोग एक एक आदमी का एक एक किस्सा एक एक रहस्य । कौन किसका किस्सा जानता है ? बोलो ? कौन किसक बारे मे जानता है ?

हिमाद्रि लीजिए शुरू कीजिए आप लोग ।

सातू चीयस ।

शशि चीयस ।

कार्तिक यह क्या ?

हिमाद्रि हँसकर
वाह कार्तिक दा, पीने स पहले चीयस किया जाता है आप नही जानते ?

कार्तिक ना । मैं तो कहता ह—तारा तारा काली ब्रह्ममयी मा ।
एक साथ बडा सा घूट लेकर कार्तिक मुख विकृत करता है
आ हा, क्या बात है विलायती की । जी जुडा गया ।

शशि जुडा गया नही, जल गया कहिए ।

कार्तिक एक ही बात है भाई एक ही बात है ।

लडकी सच ? जो जलना और जी जुडाना एक ही बात है ? सच ? सच कह रहे हो ?
पीछे की ओर उगली से दिखलाते हुए

तो घू धू करती वह आग, जला रही है या जुडा रही है ?

लडकी पर पडने वाली रोशनी अचानक बुझ जाती है।

शशि और कितनी दर लगगी हिमाद्रि ?

हिमाद्रि ज्यादा स ज्यादा दो घण्टा। आग खूब तेज जल रही है।

कार्तिक हा, कम उम्र का मुर्दा है, जलने म देर नही लगगी।

अचानक एक कुत्ता जोरों से रोने लगता है। सातू बुरी तरह चौंक पडता ह।

कार्तिक अर सातू बाबू, कुत्ते की रुलाई सुनकर आप एसा चौंक क्यो पडे ?

सातू हल्की हँसी क साथ

कुत्ते की यह चीख मुझे बहुत बुरी लगती है, मुझसे कभी नही बदाश्त होती।

खिडकी मे लडकी का चेहरा दिखलाई पडता है।

लडकी कभी नही ? सच ?

शशि हा, कुछ ऐसी आवाजें होती हैं जो बचपन से ही जाने क्यो

सातू गभीर

नही बचपन से नही। 'कभी' मैंने एम ही कह दिया था—हटाइए इसे। एक घूट लेता है।

लडकी क्या, हटाइए क्यो ? बोलो न, अपनी कहानी बोलो न।

सातू कार्तिक बाबू, पाच काला तो खुला ही है, इन लागो की काली झडी नही खुलवाइएगा ?

लडकी नही कहोग ? अपनी कहानी नही कहोगे ?

शशि हा न। आओ तो हिमाद्रि। अभी सब काला बद करके लाल करता हू।

ताश बाटा जाता है। लडकी खिडकी से हटकर दरवाजे के पास आकर उत्सुकता से देखती है।

शशि बोलिए।

सातू सोलह।

हिमाद्रि पास।

कार्तिक पास।

शशि सत्रह।

सातू मेर।

शशि अठारह।

सातू पास।

शशि रंग लगाता है। ताश बाँटकर खेल शुरू होता है। लडकी पास आकर झुककर एक आदमी का ताश देखने लगती है। फिर सामने की ओर आ जाती है।

लडकी मुलायम स्वर मे

साहब बीबी। पेयर। साहब-बीबी पेयर। पेयर ? ना जोडा ?
वह कविता थी न मौसी सुनाया करती थी जोडा—जोडा हा,
याद आया—
आम का पत्ता जोडा-जोडा
आम का पत्ता जोडा-जोडा
मारा चाबुक दौडा घोडा
छोड रास्ता खडी हो बीबी
आता है यह पगला घोडा

धीरे धीरे करके आवाज तेज होती जाती है। मुट्ठी बंध जाती है—चेहरे पर वेदना का भाव उभर आता है।

पगला घोडा। घोडा पगला गया है। बदूक से उसे मार दिया गया है।
आल राइट, वेरी गुड।
अचानक मुह दबाकर उसी कुत्ते की तरह चीत्कार कर उठती है।
ना आ आ आ

सातू ग्यारह तरह सोलह। चलिए काली झडी हो गयी।

लडकी सामने एक ओर हट जाती है। उसकी नजर इन लोगों की ओर है। दशकों की ओर पीठ है जिस पर खुले बाल लहरा रहे हैं।

काली झडी
बोतल उठाकर
कार्तिक बाबू, गिलास बढाइए, आप भी शशि बाबू।

लडकी घूमकर खडी होती है। खिलाडियों की ओर उँगली दिखाती हुई दशकों से कहती है

लडकी ये दुख भुलाना चाह रहे हैं ? शराब के नशे म ?

खिलखिलाकर हँस पडती है। हसते हँसते चली जाती है, पीठ पर बाल लहराते रहते हैं। सातू ताश बाँटता है।

शशि अब और नहीं। मन नहीं कर रहा है।
कार्तिक क्या साहब, हार गये तो रोने लगे।
शशि खड़े होते हुए
नहीं, हारने की बात नहीं है। अच्छा, क्या जीतने पर हर समय अच्छा ही लगता है?
सातू वाह! जीतने पर अच्छा नहीं लगता?
शशि नहीं! हर जीत अच्छी लगने वाली नहीं भी हो सकती है।
सातू जैसे?
शशि जैसे? लीजिए आपने तो मुश्किल में डाल दिया। अरे, कोई इतना नाप-तौलकर थोड़े ही यह बात कही थी। अच्छा, मान लीजिए किसी बात पर बीबी से आपकी खूब बहस हो गयी।
सातू जोर से हँसते हुए
बीबी से मेरी बहस? अरे शशि बाबू, आपको और कोई बीबी वाला नहीं मिला?
कार्तिक क्या, क्या आपने शादी नहीं की है?
सातू ना, एकदम नहीं एक बार भी नहीं। समय ही कहाँ मिला?
शशि समय न मिलने के कारण ही ब्याह नहीं कर पाये?
सातू लीजिए इस बार आपने बात पकड़ ली। मैं तो यों ही
कार्तिक ब्याह करने की इच्छा कभी नहीं हुई?
सातू इच्छा हो क्या? ब्याह करके लोग जो कुछ पाते हैं वह मैं यदि बिना ब्याह किये ही पा जाऊँ तो? और इतना ही नहीं, दूसरे सब लोगों से अच्छा ही पा जाऊँ तो
हिमाद्रि सच, क्या ऐसा हो सकता है?
सातू लगता है, हिमाद्रि बाबू को मेरी बात जची नहीं।
हिमाद्रि मुझे जँचने न जचने का सवाल नहीं है। मैं तो केवल पूछ रहा हूँ कि क्या सचमुच वैसा होना संभव होता है?
सातू देखिए हिमाद्रि बाबू, यदि आप कहें कि पुत्रार्थ क्रियते भार्या, तब बात अलग है। पर अपने वंश की बेल बढ़ाने की बात तो कभी मेरे लिए सर दर्द बनी नहीं। अब आप ही बतलाइए क्या करूँ?
हिमाद्रि मैंने वंशबेल बढ़ाने की बात तो नहीं कही।

सातू तो आपका मतलब घर गृहस्थी, बीवी और उसके हाथ की बनाई स्वादिष्ट रसोई से था ?

जोर से हँस पड़ता है

वह सब-कुछ नही है हिमाद्रि बाबू कुछ नही है। आप भी जानते हैं और मैं भी अच्छी तरह जानता हूँ—असल चीज कुछ और ही है।

कार्तिक वह असल चीज आपको कहाँ मिलती है ?

सातू अरे कार्तिक बाबू ठीकदारी का काम। कुली मजूर हैं, और और बहुतेरी जगहे हैं

कार्तिक माने भले घरों को बाद देकर ?

सातू आप जिसे भला घर कहते हैं वह एकदम बाद तो नही रहा। पर उन सबमे सचमुच भला कौन था यह कहना कठिन है।

शशि इस बीच दरवाजे तक आकर बाहर देख रहा था। अचानक लौटकर अपना गिलास सातू की ओर बढा देता है।

शशि थोडी और दीजिए तो।

सातू यह हुई न कोई बात ! आइए हुजूर बडी खुशी से लीजिए।

ढालकर

कार्तिक बाबू आप ?

कार्तिक गिलास खाली करके बढाते हुए

डिट्टो। मैं कभी पास नही करता।

सातू हिमाद्रि बाबू विचार कुछ बदला ?

हिमाद्रि हँसकर

नही, अभी तो नही।

शशि खिड़की तक जाता है।

कार्तिक शशि बाबू क्या बात है ? आप इस तरह बेचैन क्यों हो रहे हैं ?

शशि घूमकर

ऐं ? नही बैठे-बैठे पैर जकड गया दर्द करने लगा।

लडकी खिलखिलाकर हँस पडती है। कमरे के बाहर का वह हिस्सा आलोकित हो उठता है। भीतर अन्धकार है केवल खिडकी के पास खडे शशि पर हल्की-सी रोशनी पड रही है।

लडकी पैर नही पर नही सिर सिर दर्द करने लगा है। और करेगा नहीं ? भीतर न जाने कितना कुछ भरा हुआ है।
तुम लोग उसे खाली तो करते नही, सब कुछ सँजोकर रखे रहते हो तो क्या होगा ? मन म कुछ मथ रहा है न ? भीतर ही-भीतर कुछ उमड घुमडकर तुम्हें बेचन किये है तुम्हारी समझ मे नही आ रहा है पर

शशि स्पष्ट रूप से फिर भी जसे अपने आपमे हो
मालती !

लडकी मालती ? मालती न जाने कब की मरकर भूत हो गयी। मेरी तरह। जलकर राख हो गयी ठीक इसी तरह—
पीछे की ओर उँगली से दिखलाते हुए
ऐसी ही धू धू करती आग म ठीक मेरी तरह।
शशि चौंक पडता है मानो सामने किसी को देखकर अवाक् हो गया हो।

शशि मालती।

लडकी हा मालती। बोलो न अपनी हार जीत की कहानी कहो न।
दशको से
बडी अच्छी कहानी है। मुझे बडी अच्छी लगती है।
शशि खिडकी से हटकर सामने की ओर बीच मे आता है। लडकी उसके पास ही है पर पीछे। शशि जैसे किसी अदृश्य व्यक्ति से बात कर रहा है। लडकी पीछे से ही जवाब देती है।

शशि मालती ! मालती तुम यहा क्या आयी ?
लडकी अब मालती बन गयी है। सीधे खडी हो जाती है। उसके मुह पर फीकी हँसी और आखों मे पीडा भरा क्रोध का भाव है।

मालती तुम मुझे भगा दोगे ?

शशि तुमने वचन दिया था कि तुम कभी भी

मालती मैंने वचन नही दिया था।

शशि बात हुई थी कि तुम कभी भी

मालती नही, कोई बात नही हुई थी। तुमने कहा था, तुमने। सब कुछ

तुम्हारा ही कहा हुआ था।

शशि हाँ, हो सकता है—पर क्या वही अच्छा नहीं है ?

मालती अच्छा-बुरा उचित-अनुचित-मंगल अमंगल। तुमने सब ठीक कर रखा है। तुम सब ठीक-ठीक जानते हो। तुम विधाता हो न ? तुम्हारे विधान में तो भूल हो नहीं सकती ?

शशि मालती, तुम खुद भी जानती हो कि

मालती सहसा क्रुद्ध होकर
क्या जानती हूँ ? खुद क्या जानती हूँ ?

शशि नहीं जानती ? इस समय इस तरह मेरे पास आने का मतलब

मालती चले जाने को कह रहे हो ?

शशि इसके सिवा और उपाय भी क्या है ?

मालती ठीक है। चली जाऊँगी। पहले भी तुमने चले जाने को कहा था, चली गयी थी। जिस रास्ते तुमने जाने को कहा था, उसी रास्ते गयी थी। हमेशा तुम्हारी ही जीत हुई है—हमेशा।

शशि जीत ?

मालती क्या, जीत नहीं हुई है ? हमेशा तुम्हीं नहीं जीते हो ?

शशि कैसी जीत ? किसकी जीत ?

मालती तुम्हारी और किसकी ! अपने आपसे जब-जब तुमने लड़ाई की है तुम्हीं जीते हो। तुममें इतनी शक्ति है—तुम जीत सके। तुम टूटे नहीं, बिखरे नहीं, प्रवाह में बह नहीं गये। तुम हमेशा जीते। हार कैसी होती है तुमने जाना ही नहीं।

शशि मैं क्या हार जीत की बात सोचकर

मालती नहीं सो क्यों ? सो क्यों सोचोगे ? तुम तो सोचते हो अच्छे-बुरे की बात, उचित अनुचित की बात, मंगल अमंगल की बात।

शशि चीखकर
मालती !

घूमकर मालती के सामने खड़ा हो जाता है।

मालती रुद्ध स्वर में
ठीक है, मैं चली ही जाऊँगी। मैं जानती थी तुम चले जाने को ही कहोगे। अपनी जीत के सुख का लोभ तुम नहीं छोड़ सकते।

शशि कुछ कहना चाहता है पर मालती उसे रोक देती है।

जलती आँखों से उसे देखती हुई एक कदम और आगे आती है ।

जाने से पहले तुम्हे बतला देना चाहती हूँ कि मैं क्यो आयी थी ।

मालती साडी के नीचे से ब्लाउज खींचकर ऊपर करती है । नीचे का बटन खोलने लगती है ।

शशि आश्चर्य से

मालती, यह क्या कर रही हो ?

अचानक एकदम अ धकार हो जाता है । अ धकार मे लडकी की हँसी सुनायी पडती है । भीतर कमरे मे प्रकाश हो जाता है । शशि पहले की तरह खिडकी मे खडा है । लडकी नहीं है ।

कार्तिक पैर तो मेरा भी जकड गया ।

उठकर अँगडाई लेता है

तारा तारा मा ।

सातू हँसकर

चीयस ! लीजिए ।

कार्तिक को गिलास थमाता है ।

कार्तिक सातू बाबू जानते है, यह काली का प्रसाद है—श्मशान काली का प्रसाद ! मा—मा ।

पीता है

सातू शशि बाबू क्या सचमुच और नही खेलिएगा ?

शशि एक कदम आगे बढकर

आप कहिएगा तो खेल ही लूगा

सातू नही, नही, मन न हो तो हटाइए । इससे अच्छा तो कुछ बातचीत ही की जाय ।

लडकी भागती हुई आती है—अपनी जगह पर

लडकी हा—हा यही अच्छा है । बातचीत हा—किस्सा-कहानी हो

बडे उत्साह से गाल पर हाथ रखकर कहानी सुनने बैठ जाती है । शशि भी इस बीच बैठ चुका है ।

क्या हुआ ? शुरू करो ।

सातू कार्तिक बाबू शुरू कीजिए ।

कार्तिक मैं ?

सातू आपने ही कहा न कि सिंहद्वार पर बैठे-बैठे आप सारी दुनिया की खबर लिया करते हैं। उसी में से एकाध मजेदार किस्सा सुनाइए न।

हिमाद्रि मजेदार किस्सा ? श्मशान में ?

हँस पड़ता है

सातू श्मशान में ही तो मजेदार किस्सा जमता है। भूत की कहानी सुनने के लिए कमरे के भीतर गुनगुने गरम बिस्तर की जरूरत होती है। वैसे मेरा मतलब लिहाफ की गर्मी से नहीं है।

जोर से हँस पड़ता है

कार्तिक आपने एकदम सच्ची बात कही है। श्मशान में मजेदार किस्सा ही जमता है, मान प्रेम-कहानी।

हिमाद्रि प्रेम !

हँस पड़ता है

कार्तिक मृदु हँसी

क्या हिमाद्रि, इस बुड्ढे खूसट के मुँह से प्रेम-कहानी की बात सुनकर हँसी आ रही है न ?

हिमाद्रि नहीं मैं उस कारण से नहीं हँसा।

कार्तिक तो फिर ?

हिमाद्रि श्मशान के साथ प्रेम का ठीक ठीक मेल नहीं बैठा पाया, इसीलिए शायद हँसी आ गयी।

शशि अचानक बहुत जोर देकर

प्रेम माने ही श्मशान, श्मशान मान ही प्रेम।

लड़की अचानक खड़ी होकर

झूठ। एकदम झूठ।

कार्तिक आप गलत नहीं कह रहे हैं

लड़की एकदम गलत—एकदम झूठ

सातू बात समझ में नहीं आई। श्मशान में प्रेम-कहानी जम सकती है, यह तो समझ में आया पर प्रेम माने श्मशान और श्मशान माने प्रेम, यह बात कुछ जमी नहीं इन दोनों में मेल कहाँ है ?

शशि है सातू बाबू—खासकर एक माने में।

सातू वह क्या ?

शशि दोनों में आग होती है और दोनों ही आग जलाकर राख कर देती हैं।

लडकी प्रतिवाद करते हुए
नही कमी नही। प्रेम क्या जलाकर राख करता है ? कमी नही।

सातू हँसते हुए
आई सी। प्रेम की आग ?

लडकी आत स्वर मे
नही नही वह आग जलाती नही जुडाती है। जलाती नही, जुडाती है।

कार्तिक प्रेम की आग ? हा, आप कह सकते है। पर श्मशान की आग म जलने से पहले प्रेम की आग मे जल लेना बुरा नही है।

लडकी उत्सुकता से
हाँ हा बोलो बोलो न

कार्तिक उससे कम से कम जिन्दा रहने का कोई कारण तो समझ मे आता है।

सातू आपके कहने का क्या मतलब कि जले बिना जीने का कोई अर्थ ही नही है ?

कार्तिक मेरे आपके लिए हो सकता है। पर लडकियो के बारे म मैं नही कह सकता
खिडकी के पास जाता है।

लडकी नही कह सकते ?—नही जानते

हिमाद्रि इसका मतलब आप जानते हैं।

सातू हँसकर
ठीक आप कहना चाहते हैं कि प्रेम की आग म जले बिना लडकिया के लिए जीवन का कोई अर्थ ही नही रह जाता।

कार्तिक मैं सबकी बात नही कहता।

सातू हँसकर
हा हाँ, समझ मे आ रहा है किसी एक खास लडकी की बात कह रहे है। वही किस्सा तो हम लोग सुनना चाहते हैं।

लडकी है ? तुम्हारे पास भी कोई किस्सा है ? बोलो न। मैं तो तुम्हारा किस्सा बिलकुल नही जानती।

कार्तिक हँसकर
अरे नही, नही, सातू बाबू मेरा कोई किस्सा नही है।

लडकी सच ? कोई भी नही है ?

कार्तिक अब इसी लडकी को लीजिए।

लडकी एकदम पत्थर हो जाती है।

सातू हाँ देखिए न, एक बार बात उठी थी फिर बीच में ही रह गयी। इस लडकी का क्या किस्सा है, आप कुछ कह रहे थे ?

लडकी विनती करते हुए

नहीं नहीं वह किस्सा अभी रहने दो अभी रहने दो। वह बाद में सुनाना ऐं वह बाद में सुनाना।

कार्तिक यह लडकी अभी तो चिता में जल रही है। इसके लिए जीवन का क्या अर्थ था—आप बता सकते हैं ?

सातू क्यों, क्या यह लडकी आप लोगों की प्रेम की आग में कभी नहीं जली थी ?

कार्तिक शशि हिमाद्रि तीनों ही हँस पडते हैं। लडकी दोनों हाथों से अपने कान दबाकर तेजी से चली जाती है।

शशि प्रेम की आग में ? यह लडकी ?

कार्तिक रूखे स्वर में

प्रेम से यदि आपका मतलब

हिमाद्रि रोकते हुए

अहा कार्तिक दा

सातू क्या, क्या हुआ ?

कार्तिक व्यग्य

यह गन्दी बातें, गदा बारबार हिमाद्रि को अच्छा नहीं लगता।

हिमाद्रि नहीं, बारबार गंदा होने का सवाल नहीं है। सवाल है आपके कहने का।

कार्तिक ओ हो दोष भाषा का है। ठीक है, तो तुम्ही अपनी पवित्र भाषा में कहो।

शशि पवित्र भाषा ! पवित्र !

हिमाद्रि नाराज होकर

शशि दा

शशि मारालिस्ट।

हिमाद्रि मारालिस्ट कौन है ?

शशि कौन नहीं है ? तुम, मैं, कार्तिक बाबू

कार्तिक मुझे बाद देकर ही बात कीजिए शशि बाबू। आप लोगों के मोरलिस्टों को मैं जाने दीजिए। गंदी बात कहने की मनाही है न, नहीं कहूँगा।

सातू ओ हो झगडा क्यो ? कैसे मजे मे कहानी किस्सा चल रहा था

हिमाद्रि किस्सा कुछ खास नही है सातू बाबू । मैं थोडे म सब बता देता हूँ। इस लडकी के जनमते ही मा मर गयी । सारे खानदान मे बचा केवल इसका बूढा बाप

कार्तिक बूढा क्या एकदम खखड कहिए । फिर भी उसने पचास बरस की उम्र मे सोलह बरस की लडकी से ब्याह किया

हिमाद्रि हा हा, ऐसा ही तो हमेशा हुग्रा करता है । कौन जाने एक दिन हम लोगा के कार्तिक दा भी कुछ ऐसा ही कर बठ

कार्तिक देखो हिमाद्रि, मैं ग्रौर जो चाहे करूँ

सातू ओ हो फिर गरमागरमी होने लगी । ऐसा करने से कही कहानी ग्रागे बढ पायगी ।

कार्तिक ग्रचानक हँसकर

ग्रच्छा ठीक है । हिमाद्रि तुम्ही बालो जसे मर्जी ग्राय वैसे ।

हिमाद्रि नही मैं ग्रब नही कहूगा । न हो शशि दा कह ।

शशि किस्सा सचमुच कुछ खास नही है सातू बाबू । इस किस्से का लेकर कोई छोटी कहानी भी नही लिखेगा उपयास की तो बात ही छाडिए।

सातू नही लिखेगा, तो न सही । हमे उससे क्या। हम लोग यहा साहित्य गोष्ठी करने तो जुटे नही हैं कि कहानी लिखने लायक किस्सा ही कह सुनें ।

कार्तिक हँसकर

हा, ग्रौर क्या। हम लोग तो श्मशान मित्र मडल के ग्रधिवेशन के लिए जुटे हैं, क्यो ?

सातू हा शुरू कीजिए शशि बाबू ।

शशि कहा न, लडकी का बूढे बाप के सिवा ग्रौर कोई नही था । बाप को भी लकवा मार गया था सो हिलन डुलने लायक तक न था ।

ग्रचानक कुत्ता फिर रो उठता है । शशि रुक जाता है । सातू पहले से भी ग्रधिक चौंक जाता है । दाँत पर दाँत बठाये कुत्ते का रोना सुनता रहता है । फिर हाथ के गिलास की मदिरा एक भटके मे गिरा देता है ।

कार्तिक हैं हैं यह क्या किया ? पसा खच करके लाया गया माल

सातू सम्हलते हुए

कोई कीड़ा पड़ गया था। ज्यादा नहीं थी।

बोतल में से काफी शराब डाल लेता है। शशि और कार्तिक को भी देता है।

हिमाद्रि उठकर

जाऊँ, एक बार देख आऊँ—

सातू मैं जा रहा हूँ—

खड़ा हो जाता है।

हिमाद्रि नहीं नहीं, आप शशि बाबू की कहानी सुनिए—

सातू लौटकर सुनूँगा। देखूँ, कुत्ते को भी खदेड़ा जा सके तो—

सातू चला जाता है। शशि एक घूँट पीता है।

शशि आज बहुत ज्यादा हो जा रही है।

कार्तिक चिन्ता मत कीजिए। नशे में धुत् हो जाइएगा तो हम लोग आपको कंधे पर उठाकर घर ले जायेंगे।

शशि हँसते हुए

लौटते वक्त भी कंधा दीजिएगा?

हिमाद्रि शशि दा आप भी कैसी बातें करते हैं।

शशि हँसकर

ऐसी अशुभ बात मुँह से नहीं निकालनी चाहिए, क्यों? आप तो बिलकुल औरतों जैसी बातें कर रहे हैं।

हिमाद्रि लज्जित होते हुए

होगी। औरतें ही तो बचपन से ये सब संस्कार दिमाग में बैठा देती हैं।

कार्तिक बैठा बैठा ताश फेंटता रहता है।

कार्तिक हिमाद्रि, आओ तब तक एक बाजी रंग मिलौअल खेला जाय।

दोनों ताश बाँटकर खेलना शुरू करते हैं। शशि उठकर खिड़की तक जाता है।

हिमाद्रि कार्तिक दा आप बुरा तो नहीं मान गये?

कार्तिक आश्चर्य से

तुम्हारा दिमाग खराब है? यह भी कोई बात हुई?

खेल चलता है। लड़की पर रोशनी पड़ती है—वह बैठी है।

शशि बाप रे बाप! बाहर कैसा अँधेरा है। आज क्या चन्द्रमा एकदम

गायब है ?

कार्तिक खेलते-खेलते

है, मगर छोटे साइज का ।

लडकी मन ही मन

अच्छा, उस दिन चन्द्रमा किस साइज का था ?

शशि बाहर देखकर

उससे क्या आता जाता है ।

लडकी नही, मैं सोच रही थी, ऐसा ही छोटे साइज का था शायद । या बडा था ? अच्छा उस दिन पूर्णिमा थी क्या ? बडा सा गोल, चादी के थाल जैसा चाद निकला था ?

शशि उसी तरह

उससे क्या आता जाता है ? किसने इतना खयाल किया था ?

लडकी खयाल नही किया था, क्या ? श्मशान पर आकर कौन इतना खयाल करता है । मुर्दा जलाने आये थे, जलाकर चले गये ।

शशि पहले की तरह

मालती ।

लडकी हा, मालती, मालती का मुर्दा । जलाने गये थे, याद नही है ? तुम—और तुम्हारा वह लायक

व्यग्य मे

दोस्त प्रदीप या दीपक न जाने क्या नाम था

शशि प्रदीप ।

लडकी हा, प्रदीप । बडा अच्छा नाम है । और भी न जाने कौन-कौन था—याद नही !

शशि प्रदीप ! शैतान कही का ।

लडकी हसकर

हा, एकदम ठीक । शैतान, पक्का शैतान था ! उसी के लिए तो मालती

साथ ही साथ लडकी मालती के रूप मे खडी हो जाती है । शशि उसकी ओर बढता है ।

शशि मालती ।

मालती ना, ना, ना, ना,

शशि मालती सुनो

मालती ना ना

शशि सुनो मालती, मेरी बात सुनो। इसके अलावा

मालती नहीं नहीं मुझसे नहीं होगा मुझसे नहीं होगा

शशि उसके साथ ही
इसके सिवा और कोई उपाय नहीं है मालती, और कोई उपाय नहीं है

मालती मुझसे नहीं होगा। अब मुझसे बिलकुल नहीं होगा।

शशि केवल यही एक उपाय है मालती, हम लोगों के लिए और कोई रास्ता नहीं है।

मालती अब मुझसे नहीं होगा अब मुझसे किसी भी तरह किसी भी तरह

शशि पर मालती, यदि तुम प्रदीप से शादी नहीं करोगी तो

मालती करुण स्वर में
नहीं नहीं ऐसा मत कहो मत कहो। अब वैसा किसी भी तरह नहीं हो सकता किसी भी तरह नहीं

शशि किन्तु इतने दिनों तक तो तुम उसी से

मालती इतने दिनों तक मैं जानती नहीं थी समझती नहीं थी अब मैं अब मैं किसी भी तरह उससे विवाह नहीं कर सकती तुम

शशि मालती

मालती तुमने तुमने मुझसे क्या कहा? तुम तुम क्यों आये? तुम क्यों

शशि किन्तु मैंने तो तुमसे कभी नहीं कहा कि

मालती तुम क्या हा, मैं जानती हूँ। जानती हूँ। तुमने मुझसे कभी नहीं कहा। कभी भी नहीं कहा। पर क्या? क्यों नहीं कहा?

शशि तुम जानती नहीं?

मालती जानती हूँ। प्रदीप तुम्हारा दोस्त है तुम्हारा भाई है तुम्हारा सगा फुफेरा भाई। उसके साथ बचपन से तुम जानती हूँ जानती हूँ सब जानती हूँ।

शशि तब फिर क्या ?

मालती चीखकर
केवल इसीलिए तुम मुझे अपने से दूर कर दोगे?

शशि केवल ?

मालती केवल इसीलिए मुझसे ब्याह नही करोगे ? केवल प्रदीप के लिए ?

शशि मालती

मालती प्रदीप न होता तो ? यदि उसके साथ पहले ब्याह की बात न हुई होती तो ? तब भी तुम मुझे ?

शशि मालती, इस तरह सोचने से क्या कोई

मालती बोलो न, तब भी क्या तुम मुझसे ब्याह न करते ?

शशि यह भी कोई सवाल हुआ ?

मालती तब तब फिर प्रदीप को मुह न दिखा सकोगे इसीलिए

शशि दृढ स्वर मे

प्रदीप को नही मालती, मैं अपने आपको मुह न दिखा सकूगा ।

मालती स्तब्ध हो जाती है

इस प्रकार अपने आपसे हारकर, तुमसे ब्याह करके न मैं खुद सुखी हो पाऊँगा और न तुम्हे सुखी बना सकूगा ।

मालती हारकर ?

शशि मालती आज तुम प्रदीप को छोडकर मुझसे

मालती देखो, तुम करो या न करो प्रदीप से तो मैं किसी भी हालत मे ब्याह नही कर पाऊँगी । तब भी तुम्हारी हार होगी ?

शशि तब भी मेरी हार होगी ।

मालती क्यो ?

शशि क्योकि मैं कभी भी भूल नही पाऊँगा कि मेरी ही खातिर तुमने प्रदीप का जीवन नष्ट किया ।

मालती और और सुखी नही हो पाओगे ?

शशि सुखी हो पाना क्या सभव होगा ?

मालती नही होगा ?

शशि मालती क्या तुम मुझे नही जानती

मालती जरा देर तक विह्वल नेत्रो से शशि को देखती रहती है, फिर डरकर दो कदम पीछे हट जाती है, हाथ की मुट्ठी मुह तक डर के मारे उठ जाती है । फिर अचानक घूमकर वह भाग जाती है । बस, एक भीतरी चीत्कार का स्वर गूजता रह जाता है । शशि धीरे-धीरे खिडकी की ओर लौटता है ।

कार्तिक मेरे तो सारे पत्ते खत्म होने को आए। य रहा लाल। चलो, अब कुछ देर और लड़ाई हो सकेगी।

अचानक बाहर से कुत्ते की कें कें सुनाई पड़ती ह, जसे कोई मार रहा हो। स्वर धीरे धीरे दूर होता जाता ह।

हिमाद्रि हँसकर
सातू बाबू ने लगाया कुत्ते को।
सातू का प्रवेश
क्या, भगा दिया ?

सातू हाँ। यही पास मे आराम से बैठे थे बच्चू। जली लकडी खींचकर मारा बेटा को।

शशि निशाना ठीक बैठा ?

सातू एकदम भरपूर पीठ पर

शशि मैं मारता न तो लकडी कुत्ते से दस गज दूर गिरती।

सातू नही पास से मारा था इसलिए

शशि पास से मारने से भी वही होता। मेरा निशाना कभी ठीक नही बैठता। जहाँ भी निशाना लगाता हूँ, उसके ठीक उल्टी ओर निशान लगता है।

सातू बठकर गिलास से एक लबा घूट लेता ह।

कार्तिक ताश फेंककर
लो—अब बस करो।

सातू क्या खेल रहे थे ?

कार्तिक रग मिलौअल। एसे ही समय काटने के लिए और क्या ?

हिमाद्रि उठकर अँगडाई लेता ह और सशब्द जम्हाई लेता ह। कार्तिक दो बार चुटकी बजाता ह।

सातू क्यो हिमाद्रि बाबू, नीद आ रही है ?

हिमाद्रि नही। मुरदनी म आकर मुझे नीद एकदम नही आती। न जाने क्यो।

सातू आप क्या बहुत सी मुरदनी मे जा चुके हैं ?

हिमाद्रि बहुत सी न भी हो तो १२-१४ बार तो जाना ही पडा होगा।

सातू आप ?

कार्तिक मैं इसका हिसाब किताब नही रखता। बहुत बडा खानदान है, कोई न-कोई रोज मरता ही रहता है। जीते-जी कोई सबध नही रहता, पर

मरने पर वधा देकर मैं अपना ऋण उतार आता हूँ। फिर खानदान के वाहर भी यदि माल का तार रहा तो

सातू शशि वावू, आप भी जरूर ही इस मामले म काफी जानकारी रखते होगे ?

शशि हा, सो क्यो नही।

सातू इसका मतलब यह कि मैं ही सबसे अनाडी हू। मेरी तो यह तीसरी ही मुरदनी है।

कार्तिक ऍं ? वस ?

सातू और नही तो क्या होगी ? बचपन से ही घर द्वार छोडकर इधर उधर भटकता रहा। इन तीनो म से भी कोई मेरा अपना न था।

लडकी अपनी जगह दौडकर आती है।

लडकी क्या ? क्या ? क्या कहा ?

हिमाद्रि आपका रिश्तदार कोई नही है ?

सातू देश मे, खानदान मे कौन है, कौन नही पता नही। पन्द्रह बरस की उम्र म घर छोडकर भाग आया था। उसके बाद से खोज खबर ही नही ली।

हिमाद्रि मतलब घर परिवार कहने लायक आपका कुछ भी नही है ?

सातू अट्टहास करके

घर परिवार ? जहा रहता हूँ वही घर बन जाता है। तम्बू डाक-बगला कुलिया की बस्ती, सस्ता गदा होटल—हर कही रह चुका हूँ। कुछ वाकी नहीं छूटा है।

लडकी और और कही नही रहे हो ?

सातू बीच बीच मे कभी कभी खूब सजे बजे कमरा म भी रात कटती है। उसम बहुत खच पडता है पर रहने लायक वही होता है।

हो हो करके हँस पडता है

हिमाद्रि ओ ! समझा !

सातू हसते हसते

समझ गये ? वडी बुरी सगति म पड गये है हिमाद्रि बाबू। अपना चरित्र बचाकर रखिएगा।

हिमाद्रि हँसकर

बुरी सगति से ही चरित्र बिगड जाय, वह उम्र अब कहाँ रही ?

शशि बिलकुल मत डरिए। हिमाद्रि का चरित्र बिगड़ने वाला नहीं है। एक-दम पक्का पोख्ता चरित्र है।

हिमाद्रि हँसकर
लगता है शशि दा आज मेरे चरित्र पर मरे बैठे हैं ?

शशि नहीं हिमाद्रि, नहीं। खाली तुम्हारे चरित्र की बात नहीं है। और आज की भी नहीं है। यह जो चरित्र नाम का जंतु है न, मैं उसी से हार खाए हूँ। हमेशा से।

लड़की हमेशा से ?

शशि बिना सुने
हमेशा से न भी हो तो बहुत दिनों से तो ऐसा है ही।

हिमाद्रि हँसकर
कितने दिनों से ?

लड़की दस साल सात महीने से। नहीं ?

शशि कोई दस साल तो हुआ होगा।

कार्तिक मतलब यह कि दस साल पहले आपने पहली बार चरित्र खोया था—क्यों ?

शशि नहीं, चरित्र खोया नहीं था। चरित्र पर से विश्वास खो दिया था।

कार्तिक एक ही बात हुई।

लड़की नहीं, एक ही बात नहीं है।

शशि अच्छा सातू बाबू, यह जो आप ज्यादा रुपये खर्च करके कमरा भाड़े पर लेते हैं—वहाँ आपकी जरूरत पूरी हो जाती है ?

सातू जरूरत केवल वहीं पूरी होती है शशि बाबू और कहीं नहीं।

शशि आप भाग्यवान हैं।

सातू भाग्यवान आप भी हो सकते हैं। सीधा रास्ता है। जब कहिएगा दिखला दूँगा।

शशि मैं जा चुका हूँ। काम बना नहीं।

सातू माने ?

शशि माने, जरूरत पूरी नहीं हुई।

सातू तो फिर ब्याह कर डालिए।

शशि वह करके भी देख चुका हूँ।

सातू आप ब्याह कर चुके हैं ? कब ?

शशि आठ साल पहले । एक कोशिश की थी और क्या ।

सातू कोशिश ? किस बात की ?

शशि अब अब कैसे कहूँ माने जरूरत पूरी होती है या नही, यह देखन की कोशिश की थी ।

सातू पूरी नही हुई ?

शशि ना ! उल्टे दो साल नरक यातना भोगनी पडी । खैर, अन्त म मुक्ति दे गई, जान बची ।

सातू ओ ! तो व गुजर गयी ?

हिमाद्रि हटाइए भी ।

शशि थोडी खीझ मे
हटाने की क्या बात ह हिमाद्रि ।
सातू से
वैसे वह मरी नही, भाग गई ।

हिमाद्रि जल्दी से
मान, पीहर चली गयी ।

शशि हा भाग गयी कहने से ही ता मतलब निकलता है कि किसी के साथ भाग गयी । हिमाद्रि का ध्यान इन सब बातो पर खूब रहता है । किसी ने गलत समझा और बटाधार हुआ । क्या हिमाद्रि ?

हिमाद्रि मैंने उस दृष्टि से नही कहा था ।

शशि मानो उससे कोई फक पडता है ।

हिमाद्रि कह ता रहा हूँ कि मैंने उस दृष्टि से

शशि उसकी बात अनसुनी करके सातू से
पर मुझे पूरी निश्चिती हा गयी । बाप माँ की लाडली बटी थी । रहन वाले भी बाहर के—पटना के थे । सुना कि चोरी चोरी छिपाकर, दूसरा ब्याह भी करवा दिया ह ।
अचानक हँसकर
चोरी चोरी छिपाकर, समझे सातू बाबू । मानो मैं जानता तो बाधा देता ! मैं ! !

सातू अट्टहास करके
उन लागा ने उतना छिपाया, फिर भी आपको पता चल गया ?

शशि दुनिया मे बहुत से हितपी हुआ करते हैं न, सो बडे हितू बनकर मुझे सब

सुना गये। पर उन्हें जब यह पता चला कि मैं इस मामले म कुछ नही करूँगा, तो मुझसे फिरट हो गये। अब तो बोलचाल तक बद है। वह भी जान बची।

इतनी देर तक लडकी चुप बठी सुन रही थी।

लडकी अचानक

अच्छा, तुम यह सब किस्सा क्या सुना रहे हो ? मालती का किस्सा नही कहोगे ?

सातू तब तो बडी मुश्किल है शशि बाबू। घर बसाकर भी आपका काम नही बना, घर भाडे पर लेकर भी नही। अब आपको कहाँ भेजा जाय ?

शशि हँसकर

चूल्हे मे। वह जो बडा वाला चूल्हा जल रहा है न उसी मे।

सातू अरे, वह तो है ही, हम सबके लिए। पर वहाँ पहुँचन के पहले तक क्या कीजिएगा ?

शशि तब तक तब तक दूसरो को उस चूल्हे तक पहुँचा-पहुँचाकर जिन्दगी काट दूगा। किसी तरह

लडकी नही कहोगे ? मालती का किस्सा नही कहोग ?

सातू आपका यह हाल हुआ कसे ? न घर के रहे न घाट के !

लडकी बोलो न। बोलो न।

सातू कम उम्र मे प्रेम प्रेम के चक्कर मे पड गये थे क्या ?

शशि जोर से हँसकर

प्रेम ? बगाली लडका और प्रेम ? उतना दम कहा है ?

कार्तिक क्यो ? बगाली लडको मे प्रेम करने का दम नही होता ?

शशि दूसरो म किसमे कितना होता है पता नही। पर मुझमे नही था, इतना जानता हू।

लडकी उठकर खडी होती है। थोडी उत्तेजित हो गयी है।

लडकी और बगाली लडकी मे ? बगाली लडकी मे ?

सातू अच्छा भाई, आपने किया हो चाहे न किया हो, पर क्या कोई लडकी भी आपके प्रेम मे नही पडी ?

लडकी उत्सुकता से सुनती है।

शशि हँस पडता है

मेरे प्रेम मे ? दुनिया म इतन लोग हैं उ ह छोडकर

लडकी भूठे ! झूठे ! झूठे !

बोलते बोलते दौड़कर भाग जाती है।

शशि और यदि कोई मेरे प्रेम मे पडता ही तो फिर मैं 'न घर का न घाट का' रहता ? मेरी यह दशा होती ?

सातू हा, सो तो है । आपने तो सचमुच चक्कर मे डाल दिया ।

कार्तिक चक्कर म पड़कर क्या कीजिएगा सातू बाबू । दीजिए, गिलास भर दीजिए ।

सातू हा, हा, लीजिए ।

ढालकर

आप ?

शशि कुछ सोच रहा है, जवाब नहीं देता

शशि बाबू !

शशि चौंककर

ऐ

सातू गिलास दीजिए ।

शशि ओ

आग्रह से

हा—हा दीजिए ।

गिलास की शराब खत्म करके गिलास बढा देता है । सातू ढालता है ।

सातू हँसकर

तारा तारा मा ।

कार्तिक-शशि हँसकर

तारा तारा माँ ।

तीनों एक साथ पीते हैं ।

सातू हाँ आप लोग क्या बात कर रह थे ?

कार्तिक शशि बाबू की बहू की ।

सातू नही-नही, उसके पहले, उसके पहले । मेरे जाने के ठीक पहले—

हिमाद्रि ओ शशि दा उस लडकी का किस्सा सुना रह थे ।

सातू हाँ-हाँ, याद आया ।

जरा देर सोचकर

अच्छा, कहानी पूरी हो गयी थी ?

शशि हाँ, वह तो कब की पूरी हो गयी थी ।

सातू पूरी हो गयी थी ? अच्छा, अंत म क्या हुआ था ?

कार्तिक अंत में वह मर गयी और क्या ? और उसी खुशी मे हम लोग यहा बैठे विलायती ढाल रहे है ।

हिमाद्रि हँसकर

लगता है आप तीनो का नशा एक साथ रग ला रहा है ।

सातू हिमाद्रि की बात अनसुनी करके

नही, नही, मर गयी यह तो जानी बात है । उसके पहले न जाने कुछ रहस्य सा था ।

शशि रहस्य ?

कार्तिक नही नही, रहस्य वहस्य कुछ नही था । सीधी सादी बात थी ।

लडकी रोशनी मे दिखलाई पड रही है ।

सातू नही कैसे था, मुझे अच्छी तरह याद है । अरे, उसी को लेकर तो पहले किस्से की चचा हुई ।

कार्तिक किस किस्से की चचा ?

सातू लीजिए भला । मुझे ही किस्सा याद होता तो आप लोगो से पूछता क्या ?

लडकी उस किस्से को छोड दो न । उसे याद करके क्या होगा ।

हिमाद्रि *ओ यही प्रेम की आग का किस्सा ?*

सातू हा हा । ऐ ? प्रेम की आग ? नही-नही, उसके भी पहले । आप उस समय बाहर गये थे—इसी बोतल को लेकर न जाने कौन-सी बात उठी—

कार्तिक ओ हाँ हा, याद आया । आप पूछ रहे थे कि यह छोकरी मरी, तो मलिक बाबू बोतल क्यो देने गये ?

सातू हाँ—यही बात थी इतनी देर बाद याद आयी । मैं कह रहा था न कि कोई रहस्य की बात थी ।

हिमाद्रि यही आपका रहस्य है ?

लडकी *मालती । मालती । तुम नही आओगी ? ये लोग क्या मेरा ही किस्सा कहेगे ?*

सातू हां बोलिए शशि बाबू—
शशि अन्यमनस्क है।
शशि ऐं
सातू रहस्य का उदघाटन कीजिए, शशि बाबू।
शशि कैसा रहस्य ?
लड़की मालती ! तुम नही आओगी ?
सातू वाह शशि बाबू ! आप नींद का झोंका लेने लगे थे क्या ?
लड़की मालती।
शशि झोंका ? नही, नहीं नींद का भोंका क्या लगा !
हिमाद्रि हँसकर
शशि बाबू पर चढ़ गयी है नशे में धुत हो रहे हैं।
शशि बिलकुल नहीं। मैं
लड़की मालती।
सातू नही, नहीं, नशा क्या होगा ? बोलिए शशि बाबू।
शशि क्या ?
सातू इस लड़की का किस्सा।
शशि किसका किस्सा ?
लड़की मालती।
सातू इसी लड़की का जिसे हम लोग जलाने आये है।
शशि चौंककर
मालती ?
लड़की निश्चित होती है।
हिमाद्रि आश्चर्य से
मालती ?
लड़की हां हां, मालती।
सातू तो इस लड़की का नाम मालती था।
कार्तिक शशि की बात पर ध्यान नहीं देता।
कार्तिक इस लड़की का ? मालती ? नही तो।
सातू तो फिर शशि बाबू—
शशि अचानक उठकर खड़ा होता है।
शशि मैं जरा मैं एक बार अभी आया।

दरवाजे की ओर जाता है।

सातू क्या हुआ ?

अचानक बात समझकर

ओ, बाहर जा रहे है ? जाइए, जाइए, हो आइए।

शशि तब तक जा चुका है।

कार्तिक मैं भी एक बार हल्का हो आऊँ।

दरवाजे की ओर जाता है।

सातू तो चलिए, मैं भी चलू। बगाली यूनिटी दिखला आयी जाय।

उठते हुए

हिमाद्रि बाबू।

हिमाद्रि हँसकर

नही, मुझे जरूरत नही है।

कार्तिक के पीछे सातू जाता है। हिमाद्रि स्टूल पर बठकर चौकी पर टाग फलाकर अँगडाई लेता है।

लडकी पास आकर फुसफुसाकर

सुनते हो ?

हिमाद्रि वसे ही पडा रहता है। लडकी एक कदम और आगे आती है।

सुनते हो ? सुना न ! सुनो ।

हिमाद्रि अचानक उठकर बठ जाता है जसे कोई आवाज सुनी हो। इधर उधर देखता है। लडकी को नहीं देख पाता। इसके बाद कुर्ते की जेब से घडी निकालकर देखता है, फिर रख देता है। चौकी के पास से अलसाया हुआ-सा दरवाजे की ओर जाते जाते अचानक रुक जाता है। बोतल उठाकर देखता है।

लडकी पीयोग ? पी ला न ? थोडी-सी पी लो कुछ नही होगा।

हिमाद्रि जरा सा रुककर सिर हिलाकर बोतल रख देता है। खिडकी के पास जाकर खडा होता है।

अच्छा नही पी ता। न सही। पर अपनी कहानी तो सुनाओ। सुनाओ न अपनी इनकी सबकी कहानी।

अस्थिर-सा हिमाद्रि लौट आता है।

याद आ रही है न ? क्यो ?

हिमाद्रि बोतल की ओर देखता है। जरा-सा हाथ भी जैसे बढाता है।

हाँ, हाँ, पीयो न। इसी समय पी लो, वे लोग जान भी न पायेंगे।

हिमाद्रि हाथ खींचकर घूमकर खडा हो जाता है।

नही पीयागे ? अच्छा, तो फिर उधर देखो वह जो लाल आग जल रही है एकदम लाल

हिमाद्रि खिडकी मे जाता है।

देखा। एकदम लाल हो रही है। याद आ रहा है न ? क्यो ? याद आ रहा है न ? उस समय उतनी देर तक आग को देख रहे थे, तब याद नही आया था ? बालो याद नही आ रहा है ?

अचानक हिमाद्रि का विकृत दबा स्वर सुनाई पडता है।

हिमाद्रि वह क्या मेरा दोष था ?

लडकी नही तो फिर किसका था ? किसका ?

हिमाद्रि घूमकर खडा होता है। उसके दोनो हाथ की मुट्ठियाँ बँधी हैं।

हिमाद्रि बडे क्रूर भाव से

चूल्हे मे जाय।

लडकी हँसते हुए

चूल्हे म ही तो चली गयी। नही गयी ? इसी तरह तो वह भी जली थी। तुम एकटक देखा किये थ। नही ?

हिमाद्रि कष्ट से

मिली।

लडकी उत्साह से

हाँ, हा, मिलि, मिलि।

हिमाद्रि मिलि मैं मैं

लडकी हा, हा, बोलो न, बोला न बडी सु दर कहानी है।

हिमाद्रि मैं मैं क्या कर सकता था ?

लडकी खुले बालो का जूडा बांध लेती है। आधुनिक ढग से साडी का पल्ला लेती है। मानो हिमाद्रि के लिए खडी हो।

हिमाद्रि खुद ही

ऐसा नही होता। ऐसा नही हो सकता। इतना बडा अंतर। जमी
आसमान का अंतर।

लडकी मिलि बनकर आगे आती है।

मिलि हिमाद्रि!

हिमाद्रि बोलिए।

मिलि पीडा से

बोलिए ?

हिमाद्रि हा बोलिए। क्या करना होगा ?

मिलि मैंने ऐसा क्या किया है हिमाद्रि जो तुम इस तरह कर रहे हो ?

हिमाद्रि आपने ? आपकी जो मर्जी आये कीजिए, उसमे मैं क्या क
हूँ ?

मिलि हिमाद्रि! मैं जानती हूँ मैं जानती हूँ तुम पर हर सम
हो नही पाता। जिस समाज मे मैं बडी हुई हू जिन लोगो
से देखा है, जिनके साथ उठी-बैठी हू

हिमाद्रि मुझसे यह सब क्यो कह रही हैं, मिस राय ? मैं आप
पढाता हूँ, उस बारे मे यदि कुछ कहना हो तो या
मुझसे कोई भूल हुई हो तो कहिए।

मिलि जरा देर चुप रहती है।

मिलि तुम मेरी मामूली-सी कमी भी नही सह सकते, क्यो ?

हिमाद्रि चुप रहता है।

डैडी बडे आदमी हैं—यही मेरा सबसे बडा दोष है न ?

हिमाद्रि चुप।

अचानक पीडा से

तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे पैरो पर गिरक
माँगू ?

हिमाद्रि मिस राय!

मिलि बोलो। बोलो। तुम वही चाहते हो ? यदि हाँ, तो
तुम जानते हो कि तुम जो चाहोगे मैं करूँगी।
मुझसे रहा नही जायेगा—क्या इसीलिए तुम बा
करना चाहते हो ?

हिमाद्रि मिस राय, आप उत्तेजित हो गयी हैं, इस समय बा

है। मैं चनू।

हिमाद्रि खिडकी मे लौट जाता है।

मिलि हिमाद्रि ! हिमाद्रि !

पीडा के कारण विकृत स्वर मे

आइ हेट यू आई हट यू हेट यू हट यू

दौडकर चली जाती है। हिमाद्रि खिडकी मे खडा बाहर की ओर देखता रहता ह। सातू और कार्तिक की हँसी की आवाज सुनाई पडती ह। हिमाद्रि चौंककर खिडकी से हट जाता ह। सातू और कार्तिक कमरे मे आते हैं।

सातू जोरों से हँसते हुए

क्या बात कही है आपन। एकदम सोलह आने खरी।

कार्तिक मगर ऐसा लगा जस शशि बाबू जरा

सातू वह सब कुछ नही है। बहुत दिना बाद पी है न, इसीलिए। जरा देर बाहर खुली हवा मे बैठने से ही ठीक हो जायेंगे।

कार्तिक दरवाजे तक जाकर देखकर

पास ही बैठे हैं, दिख रह हैं।

हिमाद्रि *क्या शशि दा की तबियत ठीक नही है ?*

सातू नही, कुछ खास नहीं जरा सिर मे दद हो गया है, इसीलिए थोडी देर बाहर बैठना चाह रह हैं। फिक्र की कोई बात नही है।

कार्तिक और सातू बठकर एक एक घूट लेते हैं। हिमाद्रि दरवाजे तक जाकर शशि को शायद देखता है।

कार्तिक तारा तारा मा नैया पार करो।

सातू हँसकर

अभी ही पार होना चाहते हैं ?

कार्तिक नही, नही, अभी तो बहुत मजे म हूँ, अभी क्या ?

जरा सोचकर

और वसे पार हो जाने मे भी कोई नुकसान नही है। मैं किसी को रोटी कपडा तो देता नही इसलिए मेर पीछे मेरे नाम को कोई रोएगा भी नही।

सातू रोटी कपडा न दने से कोई रोता नही ?

कार्तिक फिर सोचकर

ना मुझे तो ऐसा कोई दिखता नही जो उसके बिना भी मेरे लिए रोए। आपके कोई है क्या ?

सातू मेरे ? ना। रोना तो दूर रहा, कोई बात पूछनेवाला भी नही है।

कार्तिक सब को चूल्हे मे डाल चुके है ?

सातू सब कहने से तो मतलब बहुत से लोगो से हो जाता है। मान कम-स-कम एक से अधिक तो होता ही है।

कार्तिक तो क्या आपके—एकमेवाद्वितीयम् ? कोई एक सबसे खास भी थी ?

सातू अट्टहास करता है।

सातू एकमेवाद्वितीयम। बाप रे बाप ! इतना बडा कारबार नही था कार्तिक बाबू। कहाँ से होगा, बताइए ? पन्द्रह बरस की उम्र से जिस तरह की लाइफ लीड की है उसमे

कार्तिक वाह साहब ! मैं तो मानता था कि देश परदेश घूम घामकर आपने बहुत तरह की जानकारी

सातू ओ, आप जानकारी की बात कह रहे है ?

कार्तिक नही माने बहुत तरह के लोगो के परिचय मे आने से भी तो जानकारी बढती है। मतलब, लडकियो के परिचय मे

सातू कसी लडकिया के साथ मेरा परिचय रहा है, यह तो आपने सुना ही। मेरी मौत का, उनमे से किसी पर कोई असर पडेगा, कहना कठिन है।

कार्तिक शरद बाबू ने अपने उपन्यासो मे जिनकी चर्चा की है, क्या वैसी कोई आपको नही मिली ?

सातू अट्टहास करता है। हिमाद्रि हल्का-सा चौंककर घूमकर खडा होता है। लडकी पर प्रकाश पडता है।

सातू कहाँ मिली ?

लडकी अच्छा, तुम लोग कहना चाहते हुए भी कहते क्या नही ? सब-कुछ मन मे ही क्यो दबाये रखते हो ? कहने का मन नही करता ? जोर से चिल्लाकर सब-कुछ कह डालने की इच्छा नही होती ?

हिमाद्रि अचानक दरवाजा छोडकर आगे आ जाता है।

हिमाद्रि सातू बाबू मैंने अपना निणय बदल दिया है। मुझे थोडी-सी दीजिएगा ?

सातू उत्साह से

वाह ! वाह ! क्या बात कही है, हिमाद्रि बाबू । इसी की तो कमी थी । भला बताइए, एक ही तीथ करें हम चारो और हम मे से एक की फल प्राप्ति अलग हो, यह भी कोई बात हुई ?

बड़े उत्साह के साथ चौथे गिलास मे ढालना शुरू करता है ।

कार्तिक और तीथ भी श्मशान तीथ ।

सातू हां, बिलकुल ठीक ।

हिमाद्रि बस, बस । और नही । अरे इतनी सी दे दी ?

सातू हिमाद्रि बाबू यह तो होमियोपथिक डोज है । पर हा, पहली बार एक-दम नीट मत लीजिए । जरा रुकिए मैं थोडा पानी मिला दू ।

हिमाद्रि नही आप लोगो ने जसी ली है मैं भी वसी ही लूगा ।

कार्तिक ब्रेवो ब्रदर । पर छोटे छोटे घूट लेना ।

हिमाद्रि एक घूट पीकर मुह बनाता है । लडकी उत्सुकता से देख रही है ।

लडकी पी ली ? अब बोलोगे ?

हिमाद्रि अरे बाप रे यह तो बडी कडवी ह । आप लोग किस सुख की खातिर इस जहर का पान करते है ?

कार्तिक इसका स्वाद जीभ को नही मिलता दिमाग को मिलता है समझे ।

लडकी हा, दिमाग को । तभी तो लोग कहते हैं कि यह आग की तरह है । जलाती भी है और जुडाती भी है। जलाती भी है और जुडाती भी है । नही ?

कार्तिक बोतल उठाकर

यह बोतल तो खत्म हो चली ।

सातू अब बोलिए । एक बोतल और लाकर समझदारी का काम किया न ? नही तो अब क्या करते ?

कार्तिक वह समझदारी की बात तो मेरे मन म भी आई थी । पर खाली समझदारी के भरोसे तो लाला की दुकान स माल उठाया नही जा सकता था ।

सातू अट्टहास करता है ।

लडकी थोडी और लो न ? थोडी और ले लो ।

हिमाद्रि एक घूट और लेता है ।

सब कुछ भुलाने के लिए पी रहे हो ? पर भुला नही सकोग । इससे और याद आयगी । और । तब अपना किस्सा सुनाओग, क्या ?

गुनाम्रोगे न ?

शशि दरवाजे पर लौट आता है ।

सातू आइए, आइए शशि बाबू ! दिमाग गुनासा हुआ ?

शशि *दिमाग ? मेरे दिमाग को क्या हुआ था ?—मेरा गिलास कौन-सा है ?*

सातू यह रहा । रविए, भर दू ।

भर देता है । एक घूट पीकर शशि खिड़की मे जाकर खड़ा होता है ।

शशि बाप रे बाप कैसी अंधेरी रात है ! ऐसी रात तो कभी देखी ही नहीं थी ।

लड़की नही देखी थी । तब उस दिन क्या पूर्णिमा थी ?

सातू शशि बाबू आपने तो कहानी पूरी ही नहीं की, बीच मे छोड दी ।

शशि *धीरे धीरे घूमकर*

कहानी ?

लड़की *फुसफुसाकर*

हाँ कहानी । मालती की कहानी । मालती की ।

सातू हाँ, इसी लड़की की कहानी ।

लड़की *शशि को देखते हुए*

नही, मेरी कहानी नही । मालती की कहानी, मालती की ।

शशि अचानक आगे आकर चौकी पर गिलास रख देता है ।

शशि *उत्तेजित होकर*

अच्छा सातू बाबू, एक सवाल का जवाब दीजिएगा ?

सातू *अवाक होकर*

हाँ, दूगा क्या नही ?

शशि *जल्दी से*

मान लीजिए मैं आपका दोस्त हूँ, खूब गहरा दोस्त

सातू सो तो है ही ।

शशि नही नही, ऐसा नही और भी गहरा एकदम बचपन से या मान लीजिए, मैं आपका भाई हू छोटा भाई । मैं एक लड़की से आपका परिचय करवाता हूँ और कहता हूँ कि मैं इससे ब्याह करने जा रहा हू । लड़की भी, मान लीजिए, मुझसे ब्याह करना चाहती है । आप आप क्या उसे

रुक जाता है

लड़की — और बताओ न ? इतने से क्या काम चलेगा ?

शशि — एक बार सिर पर हाथ फेरकर

नहीं मैं ठीक से कह नहीं पाया। मान लीजिए आप जानते है कि मैं बुरा आदमी हूँ। नहीं इससे भी बढ़कर कि बड़ा निष्ठुर हूँ क्रूर हूँ, स्वार्थी हूँ मेरे साथ ब्याह करके लड़की सुखी न हो पायेगी। आप यह जानते हैं खूब अच्छी तरह जानते हैं। तब भी क्या

फिर रुक जाता है

लड़की — सच बात कहो न। आगे बोलो।

शशि — इतना ही नहीं आप यह भी पाते है कि आप उस लड़की से प्रेम करते हैं लड़की भी आपको चाहती है—लड़की यह अच्छी तरह समझ गयी है कि अदी माने मेरे साथ ब्याह करके उसका जीवन नष्ट हो जायेगा—तब भी तब भी क्या आप उसे मेरे हाथो सौंप देंगे ?

सब चुप होकर सुन रहे हैं। कोई बोलता नहीं।

बोलिए। सौंप देंगे ? सब-कुछ जानते समझते हुए भी ? इस तरह उस आग मे झोकना ठीक होगा ? मैं आपका दोस्त हूँ भाई हूँ क्या इसी लिए ऐसा करना उचित होगा ?

सातू — बड़ा टेढ़ा सवाल पूछा आपने, शशि बाबू। इसका क्या जवाब दूँ।

शशि — आप कार्तिक बाबू ?

कार्तिक धीरे धीरे नकारात्मक सिर हिलाता है।

तुम हिमाद्रि।

हिमाद्रि — जरा रुककर

यही सवाल यदि आप आज सुबह पूछते या शाम तक भी पूछते तो सीधा सा छोटा-सा उत्तर देता—हाँ। क्योंकि वह लड़की आपके दोस्त की मँगेतर है।

लड़की — साँस रोककर

और इस समय ?

हिमाद्रि — धीरे धीरे

इस समय पता नहीं शशि दा।

जरा रुक कर हाथ का गिलास ऊपर उठाकर

यदि पता होता तो शायद इस पीने की जरूरत न पड़ती।

लडकी मुह ऊपर करके प्राय कुत्ते के रोने की आवाज की तरह आवाज करती हुई

मा ल ती ई ई । ये लोग नही जानते। नही जानते और यदि जानते भी है तो कहते नही।

कमरे के भीतर इस बीच धीरे धीरे प्रकाश कम होते होते करीब करीब अ धकार सा हो गया है। शशि इधर आगे आ गया है।

शशि मालती।

लडकी मालती बनकर सामने आकर खडी होती है। दोनो पर रोशनी पड रही है—शेष अ धकार।

मालती।

मालती हा, मैं चली ही जाऊँगी। मैं जानती थी, तुम चली जाने को ही कहोगे। अपनी जीत के सुख का लाभ तुम नही छोड सकते।

शशि जसे कुछ कहना चाहता है। उसे रोकती हुई

जाने स पहले केवल तुम्ह बता देना चाहती हू कि मैं क्यो आइ थी।

मालती साडी के नीचे से ब्लाउज खींचती है। सबसे नीचे का बटन खोलने लगती है।

शशि आश्चय से

यह क्या कर रही हो मालती ?

मालती की उँगलियाँ रुक जाती हैं। आँखो मे पहले हल्का आश्चय फिर सतोष। फिर बडी पीडामयी तीखी हँसी। शशि सम्मोहित-सा उस हँसी की ओर देखतता रहा है। नीचे का बटन खोलकर मालती धीरे धीरे शशि की ओर पीठ करके खडी होती है। पीछे का एक हिस्सा खोलकर उसे दिखलाती है। हल्की सी चीत्कार के साथ शशि एक कदम पीछे हटता है।

यह क्या ?

मालती तुम्हारे दोस्त तुम्हारे भाई का प्रसाद।

शशि क्यो ?

मालती मैंने उसे कहा था कि मैं उससे घृणा करती हूँ और तुम्हे प्यार।

शशि एकदम चुप। मालती ब्लाउज नीचे करके बटन लगाने

लगती है।

किस चीज से किया है, जानते हो ?

शशि बोल नहीं पाता।

हम लोगो के ब्याह मे तुमने जो चादी का चाकू दिया था, उसे ही गरम करके।

शशि फिर चुप।

चादी खूब जल्दी गरम हो जाती है न, इसीलिए। उसके पास समय बहुत थोडा था।

शशि देखता ही रह जाता है। मालती शशि की आखों मे आखें डाले ब्लाउज साडी के नीचे घुसा लेती है। उसके चेहरे पर वही तीखी हँसी है—जलती हुई। धीरे धीरे सब अधकार हो जाता है। पुन कमरे मे चौकी के पास रोशनी पडती है। शशि ने जहा पर खडे होकर इनसे सवाल किया था, वहीं वसे ही खडा है। मालती नहीं है।

शशि नही पता, हिमाद्रि ?

हिमाद्रि न शशि दा ! इस समय कुछ पता नही कुछ नहीं कह सकता।

शशि आप लोगो मे से किसी को भी पता नही है ?

सातू और कार्तिक गरदन हिलाते है।

मैं जानता हूँ। आप कत्तव्य समझकर उस लडकी को मेरे हाथो सौप देंगे और साल भर के अन्दर अपने ऊपर तेल छिडककर वह आग लगा लेगी। तब हम और आप उसके जल शरीर को कधा देंगे। और इसी तरह उसे यहा आकर फूक देंगे।

सब चुप।

आप कहेंगे—वह मेरे अत्याचार से मरी है। ठीक ही तो है। इसीलिए मरी है। आपका क्या दोष ? दुनिया यही कहेगी—आपका क्या दोष ? और आप भी दुनिया के साथ गला मिलाकर जब तक कह सकिए जब तक

अचानक गिलास उठाकर एक घूट मे खत्म कर देता है।

उसके बाद एकदम शात ठडे स्वर मे बोलता है।

ताश दीजिए सातू बाबू। देखू, इस बार जीत होती है या हार।

यवनिका

द्वितीय अंक

स्थान वही। पर्दा खुलने पर अपनी जगह पर लडकी दर्शकों की ओर मुह करके बैठी है।

लडकी कैसी लगी कहानी ? मालती की कहानी ? बडी प्यारी है न ? मुझे बडी अच्छी लगती है।

उन लोगो की कहानिया भी हैं—एक एक आदमी की एक एक कहानी। एक साथ सब सुनने से शायद उतनी अच्छी न लगे। कुछ कुछ मिलती जुलती सी है न। पर मुझे इनमे से हर एक कहानी अच्छी लगती है। समान रूप से अच्छी लगती है। बार बार सुनने का मन करता है। प्रेम-कहानी है न ! हा प्रेम कहानी। प्यारा सा शब्द है, है न ? प्रेम। ठीक उस आग की तरह जलाता भी है और जुडाता भी है। यदि ऐसा न होता तो

अच्छा यह पीडा यातना, जलना यह सब एकदम फालतू बात है न ? इनमे से कोई भी मतलब की बात नही है असल बात नही है। मरने पर तो जलना ही होगा, जैसे अभी मैं जल रही हूँ। पर यदि केवल यह जलना ही रहे केवल यही तो ओह

दोनों हाथ से मुह ढककर बैठ जाती है। कमरे के भीतर धीरे धीरे रोशनी होती है। आवाज सुनाई पडती है।

कार्तिक सोलह।

शशि मेरे।

कार्तिक सत्रह।

शशि मेरे।

कार्तिक अट्ठारह ।

शशि मेर ।

कार्तिक उन्नीस ।

शशि मेर ।

हिमाद्रि क्या कर रहे है शशि दा ? चार काला खुला हुआ है ।

शशि तुम रुको तो । मेरे ।

कार्तिक बीस ।

शशि मेर ।

कार्तिक पास ।

सातू डबल ।

हिमाद्रि हुआ न ? चार काला पहले से ही है । इस बार डबल । काली झडी पूरी हो गयी ।

शशि *हँसकर*
लाओ, रग लगाऊँ ।

रग लगाता है । ताश बाटकर खेल शुरू होता है । दूसरी बोतल चल रही है । लडकी धीरे धीरे मुह उठाती है ।

लडकी शाम के समय आसमान किस तरह धीरे धीरे रग बदलता है । मेरे कमरे की खिडकी पश्चिम की ओर है । बचपन से ही हर शाम को मैं खिडकी मे खडी होकर आसमान का रग बदलना देखा करती थी । मुझे बडा अच्छा लगता था । पद्रह साल की उम्र तक रोज हा सच रोज शाम को उसी खिडकी मे खडी होकर मैंने आसमान को देखा था । उसके बाद तीन साल तक नही देख पायी । कमरे म खिडकी ही नही थी पूरब-पश्चिम की तो बात ही क्या । बाहर की ओर जितनी खिडकियाँ थी बद थी । सब म धुधला शीशा लगा हुआ था । रोशनी आती थी पर दिखलाई कुछ भी नही पडता था । ओह, शाम के समय आसमान दखने क लिए मैं कसा छटपटाया करती थी । मन करता था *काश, एक दिन एक शाम पश्चिम की ओर की एक खिडकी खुल* जाती तो जी भरकर आसमान के उस रग को

सातू रग खोलिए ।

कार्तिक काला पान ।

शशि क्यो, कोई एतराज है ?

कार्तिक नही-नही, एतराज क्यो होगा । चलो हिमाद्रि ।

लड़की तीन साल बाद तीन साल बाद फिर से आसमान देख पाई । वही पश्चिम वाली खिड़की थी । कब्जा टूट गया था, पल्ला नीचे झूल आया था झूले ! बरसात मे छत से पानी चूता था चूए । बाबूजी को लकवा मार गया था, वे हर समय सोये रहते थे । घर की हालत बुरी थी फिर भी मुझे सब-कुछ बड़ा अच्छा लगा था क्योंकि रंग बदलते आसमान को मैं देख सकती थी । उन बदलते रगों के साथ न जाने कितने भाव मेरे मन मे आते और जाते । मुझे लगता जैसे मैं नववधू हूँ उसी सलज्जा सध्या-सी मैं भी लजाई-सी आरक्त हो उठती । सोचती काश कोई राजकुमार मुझे देखता, मेरा वरण करता

अचानक चौंककर

हे भगवान देखा मैं क्या क्या अंड-बंड बक गयी । यह कहानी थोड़े ही है । छि अच्छा तुम लोगो का खेल खत्म नहीं होगा ? मैं तो जलकर राख होने को आयी।

कार्तिक **अचानक जोर से**

यह लीजिए साहब, रग का एक्का ।

सातू वाह, वाह, कार्तिक बाबू, यही तो चाहता था ।

हिमाद्रि चलो गया

लड़की पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है ।

सातू तेरह, सोलह अठारह, उन्नीस

हिमाद्रि *गिनकर क्या कीजिएगा । वह तो जानी बात है ।*

सातू उन्नीस इक्कीस—काली झंडी ।

शशि **हँसते हुए**

फिर हार गया न !

हिमाद्रि हारिएगा नही ? बिना सोचे विचारे उन्नीस-बीस काल दीजिएगा तो और क्या होगा ?

शशि इसे ही तो खेल कहते हैं । बहुत सोच विचारकर खेलने से क्या खेल होता है ?

सातू हिमाद्रि बाबू, अपना गिलास खाली कीजिए ।

हिमाद्रि नही, मैं और नही लूगा । आप लोग लीजिए ।

सातू अरे वाह ! आपने तो पहली बार जो जरा-सी ली थी उतनी ही

हिमाद्रि उतनी ही काफी थी। मेरा काम हो गया।

सातू आपका काम ?

हिमाद्रि उठकर

मैं एक बार देख आऊँ।

जल्दी से चला जाता है।

सातू आंख मार कर

कार्तिक बाबू उसका गिलास दीजिए तो

कार्तिक हँसते हुए, गिलास बढ़ाता है। सातू उसमें थोड़ी और डाल देता है। गिलास फिर से यथास्थान रख दिया जाता है।

शशि शुरू में थोड़ा नशा हुआ था। अब तो जैसे वह भी मिटा जा रहा है। क्यों, बतला सकते हैं ?

सातू मुझे भी वैसा ही लग रहा है।

कार्तिक विलायती बोतल न होती तो कहता कि साला ने पानी मिला दिया होगा।

सातू हो सकता है खेल में हम लोग मशगूल थे इसीलिए ऐसा हुआ हो। थोड़ा रिलैक्स होकर पीये बिना नशा रंग नहीं लाता।

कार्तिक चलिए, रिलैक्स होकर पीकर देखा जाय।

टाँगें फैलाकर बैठता है

क्या कहते हैं—चीयर्स ?

सातू हँसकर

तारा तारा मा

शशि आपको कल काम करने में तकलीफ न होगी ? सारी रात जगने के बाद दिन भर धूप में

सातू नहीं, शशि बाबू इन सबकी आदत पड़ गयी है। रात में ही सोना होगा, ऐसा मेरी जन्मपत्री में नहीं लिखा है। जब समय मिले, एक नींद ले सकता हूँ।

शशि मतलब, नेपोलियन की तरह ?

सातू अट्टहास

हाँ बिल्कुल। बस, दिग्विजय नहीं हो पाई क्या कहूँ।

कार्तिक मुझे सुबह जरूर झपकी आयेगी। डाक्टर साहब की नजर न पड़े यही भगवान् से मनाता हूँ।

सातू क्यो ? किसी मुरदनी के सिलसिले मे आप सारी रात जगे हैं, यह सुनकर

कार्तिक अरे सातू बाबू, आपका अपना कारबार है आप क्या जानिए कि नौकरी मे कितने बधन होते हैं।

सातू हा, सो तो है। मैंने तो कभी नौकरी की नही

कार्तिक डाक्टर साहब का कहना है कि नीद के झोके मे मैं ऊटपटाग दवा देकर रोगी की जान ही ले लूगा।

सातू अच्छा कार्तिक बाबू, आप तो बहुत दिनो से इस काम मे हैं न ?

कार्तिक हा करीब छब्बीस साल हो रहे हैं।

सातू आप से कभी दवा देने मे कोई भूल नही हुई ?

कार्तिक भूल ? होगी क्यो नही ? न जाने कितनी हुई है। पर हा, एसी भूल कभी नही हुई कि रोगी मर ही जाये। सच पूछिए तो, तेज जहर का तो बहुत काम पडता नही।

सातू थोडा बहुत पडता है ?

कार्तिक हा, सो क्यो नही। आपको किसी का सफाया करना होगा तो बतलाइएगा।

सातू अट्टहास

नही साहब, अभी तक वैसी जरूरत कभी नही पडी।

शशि मुझे पडती—यदि बीवी खुद ही रिहा न कर गयी होती तो।

सातू अच्छा, आपसे कभी किसी न जहर मागा है ?

कार्तिक दृढ स्वर मे

नही।

लडकी पर रोशनी पडती है।

सातू कोई मागता तो क्या करते ?

कार्तिक न देता।

लडकी क्यो ?

कार्तिक खून खराबे मे मैं नही पडता।

सातू नही-नही कार्तिक बाबू मैं खून की बात नही करता। मान लीजिए, कोई अपने लिए ही चाहता तो ?

कार्तिक तनिक हँसकर

तब भी न देता।

लड़की हाँ। न देते। पर उसके बदले म कुछ और दे सकते ? देते ?

शशि मान लीजिए उसे बहुत ही जरूरत होती ? जिन्दगी से मौत यदि उसके लिए अधिक अच्छी होती तो ?

कार्तिक जिन्दगी स मौत कभी अच्छी नही होती।

लड़की नही होती ?

शशि यह आप क्या कहते हैं कार्तिक बाबू ?

कार्तिक ठीक ही कह रहा हू। मैं जो विश्वास करता हू, वही कहता हू।

शशि यदि वह कुछ ऐसी तकलीफ भोग रहा होता

कार्तिक हाँ, तकलीफ दूर हो सकती है, यह मैं मानता हूँ। पर हम लोग जिन्दगी मे मौत के अच्छी होने की बात कर रहे थे। जिन्दा रहने से अच्छा और कुछ भी नही है।

शशि मैं नही मानता।

कार्तिक हँसकर

आपको मानने को कौन कहता है ? मैं तो अपने मानने की बात कह हूँ। आप लोग चीयम कहते हैं, मैं तारा तारा मा कहता हू—इसमे किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ?

शशि थोडा उत्तेजित होकर

किन्तु मान लीजिए, किसी की जिन्दगी मे इतनी तकलीफ हो कि उसके लिए जीने का

कार्तिक लोगो की तकलीफ कम करने का जिम्मा तो मैंने लिया नही है।

लड़की और तकलीफ देने का ? मालती की तरह तकलीफ देने का ? क्या उसका जिम्मा तुमने किसी दिन नही लेना चाहा था ?

शशि जिम्मा है या नही, इसका निणय करनेवाला कौन ह ?

कार्तिक खुद ही। निणय सही हो चाहे भूल, करनेवाला तो व्यक्ति खुद ही होता है।

सातू आप लोगो ने तो जीवन-दशन की बातचीत शुरू कर दी।

शशि हँसकर

अरे भाई यह श्मशान की महिमा है और उसके ऊपर से श्मशान-काली का दिव्य प्रसाद। जीवन दर्शन की बात हो, इसम ताज्जुब क्या है ?

सातू तो हो न। थोडा ज्ञान लाभ ही किया जाय। मेरी जिन्दगी तो भाग-

दौड मे ही बीती, कभी उस पर रुककर गौर करूँ, इस तक की फुरसत नही मिली।

कार्तिक जीवन न सही, आपने मौत तो देखी है ?

सातू ए ? मौत तो बराबर ही चारो ओर देखता रहता हूँ।

कार्तिक इस तरह नही, खूब अच्छी तरह। देखी है ?

लडकी बोलो। बोलो न !

सातू इधर-उधर करते हुए
हा, शायद वह भी देखी है। कम से कम एक बार तो देखी ही है।

कार्तिक उस समय जीवन का नही देखा था ?

सातू धीरे धीरे
शायद देखा था। हो सकता है आपकी बात ही ठीक हो। मौत को देखने पर ही शायद जिन्दगी को देखा जा सकता है।

लडकी जिन्दगी मौत। जीवन मरण। किन्तु मरण म भी यदि जीवन न दिखे न उभरे ? यदि मरण केवल मरण ही रह जाये ?

सातू देखकर अच्छा नही लगा था।

कार्तिक अच्छा लगने की बात तो नही हो रही है। बात केवल देखने की हो रही ह।

शशि क्या आपन ही कहा न कि जिन्दगी से अच्छी और कोई चीज नही है ?

कार्तिक हा, जरूर कहा है। अब भी कहता हूँ।

शशि बात कुछ उल्टी पुल्टी सी नही लग रही है ?

कार्तिक नही उल्टा-पुल्टी क्या होगी ? अच्छा लगना और अच्छा होना क्या एक ही बात है ?

सातू कार्तिक बाबू जाने दीजिए, आपका जीवन-दशन मुझ बडा भारी पड रहा है।

कार्तिक हँसकर
फिर भी आपने जीवन का कम से कम एक बार तो दशन किया ही है।

लडकी जीवन ? जीवन क्या है ? कोई मुझे समझा सकता है ? पगला घोडा ? ! मारा चाबुक दौडा घोडा ! छोड रास्ता खडी हो बीबी—आता है यह पगला घोडा। बीबी यदि रास्ता न छोडे ? यदि रास्ता छोडकर न खडी हो ? तो क्या उसके ऊपर से चले जाओगे ?

सातू दशन करके केवल इतना समझ मे आया था कि जीवन का कोई

सिर-पैर नही है ।

लडकी पगला घोडा ! घोडा पगला गया है !

सातू जीवन केवल मौत ला सकता है ।

लडकी बन्दूक से मार दिया है ।

सातू और किसी काम लायक नही है ।

कार्तिक अरे वाह, यह काम क्या कोई छोटा काम है ?

लडकी आल राइट, वेरी गुड ?

शशि चिढकर

कार्तिक बाबू, आपने बहुत ज्यादा पी ली है । न जाने क्या-क्या कहे जा रहे हैं ।

कार्तिक वाह-वाह ! यदि ज्यादा पी लेने से ही ये सब आलतू फालतू बात की जा सकती हो तो

गिलास उठाकर

तारा तारा मा

एक बडी-सी घूट लेता है

लडकी रोती-सी आवाज मे

पगला घोडा ! जरा मेरी ओर आओ म [illegible] कहो न कि— छोड रास्ता खडी हो बीवी । मैं क्या बीवी नही हू मैं क्या बीवी नही हो सकती ? मैं क्या इस आग म जलते जलते नही कह सकूगी कि पगला घोडा आल राइट वेरी गुड ??

लडकी अधकार में खो जाती है । बाद की बातें अंधेरे मे ही उसकी रुलाई मे डूब सी जाती हैं ।

सातू जरा देर बाद

क्या हुआ ? सब लोग अचानक एकदम चुप हो गय ?

कार्तिक सोच रहा हूँ ।

सातू क्या सोच रहे है ? जीवन मरण की बात ?

कार्तिक हा भी और नही भी ।

सातू मतलब ?

कार्तिक अभी फिलहाल इस लडकी की बात सोच रहा था ।

सातू इस लडकी ओ, माने इस लडकी की ?

कार्तिक हाँ ।

सातू इस लड़की का किस्सा किसी तरह पूरा नहीं हो पा रहा है।

कार्तिक कहां तक सुन चुके हैं?

सातू वह भी तो ठीक से याद नहीं। बाप को लकवा मार गया—शायद यहीं तक तो सुना था।

कार्तिक हां, वह आज चार साल से लकवा में पड़ा है। लड़की के ससुराल जाने के कुछ दिन बाद ही लकवा मार गया था।

सातू अवाक होकर
ससुराल? लड़की की शादी हो चुकी थी?

कार्तिक बाकायदा मन्त्रपाठ वगैरह करके साबित दस्तूर सब हुआ था।

सातू तो वह विधवा?

कार्तिक ना।
आवेगहीन व्यंग्य
विधवा क्या होगी? सधवा सधवा।

सातू पर सिंदूर विंदूर तो कुछ नहीं देखा? सधवा के मरने पर तो उसे सिंदूर में रँग देते हैं

कार्तिक उसे कौन रँगता? और रँग देने से ही क्या होता?

सातू उसके पति कहां हैं?

कार्तिक पति? हां, मन्त्र पढ़कर ब्याह हुआ था तो पति तो है ही। आज कहां है, नहीं मालूम। किसी पागलखाने में भी हो सकता है—घर में भी ताले चाभी में बंद हो सकता है। बहुत बड़ा मकान है, कोई परेशानी न होती होगी।

सातू आइ सी।

कार्तिक उनके घर एक ज्योतिषी आया करता था—सच पूछो तो उसकी पर वरिश उन्हीं के यहां से होती थी। उसी ने गणना करके बताया था, ब्याह हो जाने से लड़का ठीक हो जायेगा। ब्याह के दिन तक लड़के का पता था, पर उसके बाद वह न जाने कहां गायब हो गया—लड़की ने उसे देखा ही नहीं। सुहागरात के दिन भी वह लापता था।

नादि अचानक
अच्छा, उस ज्योतिषी की नौकरी अभी भी बनी है?

कार्तिक हां, शायद। अरे भाई, उसने कह दिया कि लड़की कुलक्षणी है तो वह क्या करे? बात खत्म। अब शायद दूसरी सुलक्षणी ढूंढ़ रहा होगा।

शशि आपको इतनी सब बातें कहा से पता चली ?

कार्तिक हमारे डाक्टरखाने मे जितने मरीज आते हैं न, उनमे बकबक करने की बीमारी सभी को होती है ।

सातू उसके बाद क्या हुआ ?

कार्तिक तीन साल तक ससुराल मे कैद रहने के बाद एक दिन रात मे वह भाग आयी । ससुराल से मिले गहने को देकर उसन एक दरबान को पटा रखा था । उसी ने सब इतजाम करके उसे यहा पहुचा दिया । वह दरबान अब रिटायर करके जमीन जायदाद की देखमाल करता है । गहना कम नही था । जो उसने पहने नही दिया था वह भी रात के समय गाव के पास आने पर दरबान ने छीन लिया । इनाम के तौर पर और क्या ?

सातू बडा होशियार आदमी था ! फिर ?

कार्तिक यहा आकर लडकी ने देखा, बाप खाट पकडे है, मकान की हालत खस्ता हो चुकी है । खाने-पीने का जुगाड यदि हो जाता है तो वह मलिक बाबू की दया से ।

सातू आ ! इतनी देर के बाद मलिक बाबू का प्रवेश होता है । वही रहस्य की बात का ।

कार्तिक हा, वही रहस्य । मलिक बाबू ने इसी आशा मे बुड्ढे को जिलाये रखा था कि कौन जाने किसी दिन लडकी लौटे ही ! खच ज्यादा तो नहीं था, पोसा जाता था ।

लडकी का प्रवेश

सातू अब समझ म आ गया ज्यादा कहने की जरूरत नही है । पर वह मरी कैसे ? एबौरशन था क्या ?

कार्तिक कर्कश स्वर मे हँस पडता है ।

कार्तिक वैसा होता तो भी कहता अच्छा हुआ । समझ म आता कि हाँ, मरने की कोई सार्थकता हुई ।

लडकी चुप रहो । चुप रहो बस करो एकदम चुप !

सातू माने ?

कार्तिक मलिक मे वह सामर्थ्य ही नहा है । रुपये खच करके भी नही रख सका । उसे लडकियो की जरूरत खाली हल्के-से मन बहलाव के लिए थी ।

लडकी दोनो हाथ से कान ढककर
चुप करो

हिमाद्रि लौटता है।

हिमाद्रि बस घटा भर और लगगा।

सब चुप रहते हैं। हिमाद्रि बठता है।

कार्तिक तारा तारा मा।

लडकी घटाभर और। बस एक घटा और। पगला घोडा—क्या एक बार भी मेरी ओर देखने की फुरसत तुम्हे नही मिलेगी ? मैं क्या मालती नही हू ? मिलि नही हूँ ? लछमी नही हूँ ?

साथ ही साथ कुत्ता जोर से रो उठता है। सातू चौंककर एकदम से उछल पडता है। गिलास की शराब छलक पडती है।

सातू कौन ?

हिमाद्रि कुत्ता फिर आ गया है।

सातू ए हा हाँ कुत्ता। फिर आ गया है।

सातू का हाथ कांप रहा है। लडकी उसकी ओर देख रही है

लडकी फुसफुसाकर
लछमी।

कार्तिक हँसकर
कुत्ते का रोना आपको बहुत नापसन्द है।

सातू लज्जित हँसी
नही—माने इसका चीखना मुझे एकदम

लडकी फुसफुसाकर
लछमी।

सिर पर हाथ फेरकर सातू बठता है। गिलास मे शराब ढालता है।

सातू अचानक
कुत्ते जसा नमकहराम कोई दूसरा जीव नही होता।

कार्तिक यह आप क्या कह रहे हैं ? लोग तो उल्टी बात कहते हैं।

सातू लाग खाक जानत हैं। एक कुत्ता था रोज हमार यहाँ—माने मरे यहाँ आता था दोना वक्त उसे खाना देता था

लडकी तुम खाना दते थे ? तुम देते थ ?

सातू मतलब जो भी रहता था, दे दिया जाता था। ऐसे ही था बाजारू, किसी खास जात-बात का नही था। पर बस, उसस मोह हो गया था और क्या!

लडकी मोह हो गया था ? तुम्ह ?

सातू सो ऐसा नमकहराम निकला कि पूछिए मत। दो साल बाद मिला तो उसन पहचाना ही नही। उल्टे काटने दौडा।

शशि वाह, सातू बाबू। कुत्ते के साथ दो साल बाद मुलाकात होना, उसका पहचान न पाना

सातू लज्जित हँसी

नही लोग कहते हैं न कि कुत्ता बहुत दिनो तक पहचानता रहता है इसीलिए

लडकी तुम गलत कह रहे हो। वह तुम्ह ठीक पहचानता था। एकदम ठीक पहचानता था। नही ?

सातू बदन झकझोरकर, बनावटी फुर्ती से

क्या, एक बाजी टवेन्टीनाइन और हागी ?

शशि नही ताश मे अब मन नही लग रहा है।

सातू तो कोई बढिया-सी मजेदार प्रेम-कहानी छेडिए न ?

लडकी हा हाँ वही करो।

कार्तिक प्रेम कहानी यहा कौन छेडेगा ?

सातू हिमाद्रि बाबू, आपकी ही तो इस सब के लायक उम्र है। शुरू कीजिए न।

हिमाद्रि उम्र स क्या हाता है सातू बाबू। शशि दा ने कहा न कि बगाली लडका मे प्रेम करने की सामर्थ्य ही नही होती।

शशि अरे भाई तो तुम मेरी बात को झूठी ही साबित कर दो, मुझे कोई आपत्ति नही है।

हिमाद्रि सो कैसे कर सकता हू ? आप गुरुजन ठहरे।

शशि क्या कहना है गुरु भक्ति का।

हिमाद्रि फिर बात झूठी भी तो नही है।

सातू ओफ्फोह न हो तो गढकर ही कोई किस्सा सुना डालिए।

कार्तिक अचानक

ऐं, गढकर किस्सा सुनाने से चलेगा ? तब तो मैं भी चास ल

मकता हूँ ।

सातू लीजिए न हम सब सुनने को तैयार बैठे हैं ।

कार्तिक जरा देर सोचकर

बहुत दिनों पहले एक कहानी सुनी थी—जिसने सुनाई थी वह सच्ची बात कह रहा था या गढ़कर मुझे पता नहीं । वैसे उसने अपनी ओर से इसे सच्ची घटना ही कहा था ।

सातू सच झूठ बाद में तै कर लेंगे । आप सुनाइए न ।

लड़की तुम्हारी भी कोई कहानी है ? सच ? मुझे तो नहीं पता ? बतला सकते हो, क्या ? तुम्हारा किस्सा मुझे एकदम नहीं मालूम ।

कार्तिक कहानी सुनी थी एक मोची से ।

सातू मोची से ?

कार्तिक हाँ । क्या मोची प्रेम नहीं कर सकता ?

सातू नहीं नहीं । कर क्यों नहीं सकता ? अलबत्त कर सकता है ।

शशि हम लोगों के मिनमिन मिनमिन मद्र प्रेम से तो मोची का प्रेम ही कहीं जारदार रहा होगा । क्या कार्तिक बाबू ?

कार्तिक यदि आप ऐसा मान बैठे हैं तब तो आपको निराश होना पड़ेगा ।

सातू आप सुनाइए न ।

कार्तिक एक बहुत बड़े मकान के सामने बैठकर मोची रोज जूता सिलाई करता था । मकान में बहुतेरे लोग आया जाया करते थे जूते की मरम्मत भी करवाते थे । मोची रोज ही हर तरह के लोगों को देखा करता था ।

लड़की यह क्या तुम्हारी कहानी है ? तुम्हारी कहानी है ?

कार्तिक उन्हीं आने-जाने वालों में एक दस-बारह साल की लड़की भी थी बराबर आया करती थी । कभी-कभी जूता भी सिलवाती थी एकाध बातचीत भी करती थी फिर चली जाती थी । जितने लोग आते थे उनमें इस लड़की को ही माने इस लड़की का ही वह इन्तजार किया करता था ।

सातू जरा रुकिए तो । आपके उस मोची की उम्र क्या रही होगी ?

कार्तिक हँसकर

उम्र काफी थी । चालीस-पचास रही होगी ।

शशि ओ तो वात्सल्य प्रेम था ?

कार्तिक प्रेम था भी या नही, इसका फैसला तो हो लेने दो। तुम तो पहले से ही वात्सल्य-वात्सल्य करने लगे।

सातू हा-हाँ—सुनाइए।

कार्तिक इसी तरह दिन बीतने लगे। महीने और साल भी बीत चले। बाद मे काफी-काफी दिन बाद लडकी आती। और आती भी तो मोची की ओर खास ध्यान न देती। मोची की बडी इच्छा करती कि पुकार कर उससे दो बातें करे पर साहस नही कर पाता था।

हिमाद्रि क्यो, साहस क्या नही कर पाता था ?

कार्तिक अरे भाई, इस बीच साला गुजर गये थे। लडकी पहले जसी बच्ची थोडे ही रह गयी थी।

शशि तो उससे क्या हुआ ? बात करने मे किसी का क्या एतराज हो सकता है ?

कार्तिक यही तो असल बात है। किसी के एतराज की बात न होत हुए भी मोची को साहस नही होता था। इसका मतलब क्या हुआ ?

हिमाद्रि आपके कहने का मतलब यह कि उसके अपने मन मे

कार्तिक हाँ हिमाद्रि हा। उसके मन मे क्या था, इसे वह खूब अच्छी तरह जानता था। जितना ही समय गुजरता जाता था, उतना ही वह इस बात को और अच्छी तरह समझता जाता था। चौबीसो घटे वह लडकी ही उसके दिमाग म घूमती रहती थी उठते-बठते, सोते जागत, हर समय। असल मे उस मोची के माँ बाप, भाई बहन, घर परिवार कुछ भी नही था। बिचारा एकदम अकेला था। बाहर से जैसा अकेला था वैसा ही सूना उसका मन था। सो उस सूने मन मे उस लडकी ने अच्छी तरह डेरा जमा लिया था।

सातू मतलब खाली घर पाकर पूरे पर अधिकार जमा लिया।

कार्तिक अधिकार जैसा अधिकार। साल पर साल बीतते गये—उसका एसा एकछत्र राज्य रहा कि और कोई पास ही न फटक पाया। पर उससे क्या हुआ ? मरा हाते हुए भी मोची का मन खाली ही रह गया। उससे बातचीत तक होने का हिसाब नही था, और कुछ की तो बात ही क्या ! उस बेचारे पर क्या गुजरती रही होगी, समझ सकते हैं ?

सातू ता फिर उसने मन को जबरन दूसरी ओर लगान की कोशिश क्या नही की ?

कार्तिक बुद्धू था बुद्धू। यार दोस्तों को जुटाकर हो-हल्ला कर सकता था, इधर-उधर मौज मस्ती ले सकता था, पर ना उसने तो उस लड़की के नाम पर कसम खा रखी थी न, सो उसी की याद में डूबा रहता।

सातू क्यों ?

लड़की यह किसकी कहानी है ? मुझे तो कुछ भी याद नहीं पड़ता।

कार्तिक क्यों ? बात सीधी सी है, फिर भी समझना आसान नहीं है। लड़की की याद उसे बेचैन अवश्य करती थी पर उस बेचैनी के साथ उसे कुछ और भी दे जाती थी जिसकी कीमत बेचैनी से कहीं अधिक थी।

लड़की उसका मन भर देती थी न ? उसके सूने मन को भर देती थी न ? मैं समझ रही हूँ। जानती नहीं पर समझ रही हूँ।

हिमाद्रि समझा।

कार्तिक समझे ?

लड़की पश्चिम की खिड़की से दिखने वाला वह सतरंगा आकाश कितना बेचैन कर देता था न जाने कितना। कुछ पाने को मन को व्याकुल कर देता था, कितनी तकलीफ देता था फिर भी मन कैसा भर देता था। आज भी भर देता है इसीलिए उसके लिए इतनी बेचैन रहती हूँ।

सातू इसके बाद ?

कार्तिक इसके बाद अचानक लड़की का आना बंद हो गया। बहुत दिनों तक आसरा देखने के बाद उसने बड़ी सावधानी से उसकी खोज-खबर लेनी शुरू की। जो डर था वही निकला।

शशि लड़की की शादी हो गयी ?

कार्तिक हाँ। हम बंगालियों के पिसे पिटे, सड़े प्रेम की ट्रेजडी।

हिमाद्रि किस्सा पूरा हो गया ?

कार्तिक ना, अभी और है। पर आगे की घटना सच्ची है या मोची की अपनी कल्पना, कह नहीं सकता। उसके कहे अनुसार लड़की ब्याह करके सुखी नहीं थी। उसके पति के साथ उसका कोई संबंध ही नहीं था।

सातू क्यों ?

कार्तिक क्या पता ? जरूर कोई बात रही होगी। हम लोगों के यहाँ तो ऐसा अक्सर ही होता रहा है। इसी लड़की का किस्सा लीजिए न।

लड़की पर मेरे साथ तो ऐसा नहीं हुआ था—मैंने तो किसी का खाली मन

नही मरा।

हिमाद्रि क्या ?

कार्तिक इसके बाद का किस्सा ठीक स याद नही है—लडकी विधवा हो गयी या ससुराल वालो ने निकाल दिया या वह खुद ही भाग आयी, याद नही। कहानी बहुत दिनो पहले सुनी थी न, इसलिए भूल रहा हूँ। सीधी बात यह कि कई साल बाद एक बार मोची के साथ उसकी फिर भेंट हुई भेंट हुई माने मोची ने उसे देखा।

सातू अब किस्सा रग लायेगा।

कार्तिक हँसकर

नही सातू बाबू, रग लाने लायक इसमे कुछ नही है। वह तो जैसे पहले उसे देखा करता था, वैसे ही अब भी देखता रहा। हा, इतना उसे जरूर समझ मे आया कि इन सालो म तनिक भी दूर जाने की कौन कहे, यह लडकी उसके मन मे और गहरे उतर गयी है।

कार्तिक रुकता है।

सातू क्या हुआ ? रुक क्या गये ?

कार्तिक इसके बाद क्या हुआ, मुझे नही मालूम। उस मोची से फिर मुलाकात ही नही हुई।

हिमाद्रि वाह कार्तिक दा, ऐसी जगह पर किस्से को लाकर कही छोडा जाता है।

कार्तिक हा, इस किस्से को शुरू ही नही करना चाहिए था। नशे की झोक मे लगा था कि खूब जमेगा। पर अब लगता है कि किस्से मे कुछ दम नही है।

लडकी कौन कहता है दम नही है ? दम है। बडी सुन्दर कहानी है।

कार्तिक गिलास बढाते हुए

क्या जनाब। तारा तारा माँ।

सातू ढालता है।

इतनी देर बाद अब नशा कुछ जम रहा है।

सातू हा, मेरा भी।

हिमाद्रि उठकर खडा होता है।

बाहर जा रहे हैं क्या ?

हिमाद्रि ना।

खिडकी के पास जाकर खडा होता है।

लडकी मिलि की बात सोच रहे हो ?

शशि कार्तिक दा बडी फालतू बातें करते हैं।

स्पष्ट है कि नशे मे होने पर शशि झगडालू हो उठता है।
कार्तिक सातू की ओर देखकर आँख मारकर हँसता है।

कार्तिक मैंने कौन-सी बात फालतू की ?

शशि शिकायत के स्वर में

खाली मन भरा है। मन नहीं भरा है—घटा।

कार्तिक प्रेम कहानी सुनकर आपका मिजाज गरम हो गया है ?

शशि प्रेम-कहानी ? वह प्रेम था ?

कार्तिक और नही तो क्या ?

सातू अच्छा। पहले यह बतलाइए कि प्रेम होता क्या है ?

लडकी हिमाद्रि से

तुम बतला दो न ! मिलि की कहानी ! इन लोगो से कह दो न !

हिमाद्रि बिना मुडे

प्रेम ! प्रेम वह है जो आकाश पाताल के कुलाबे मिलवाता है, बेचैन करता है, तकलीफ देता है फिर कुछ ऐसा उलटा पलटा काम करवाता है कि सब-कुछ जलकर राख हो जाता है।

लडकी केवल जलाता है ? जुडाता नही ?

कार्तिक हो हो करके हँस पडता है और मोटे बेसुरे स्वर मे गा उठता है—

कार्तिक "कही जानता पहले ही सखि, ज्वाला इतनी प्रेम मे"

लडकी प्रेम मे केवल ज्वाला है ? केवल ज्वाला ? और कुछ नही है ?

सब चुप रहते हैं। तीनों आराम से बठे झूम रहे हैं। हिमाद्रि अचानक फिरकर अपने गिलास से एक घूट पीता है। उसका मुह विकृत हो उठता है। और लोग उस ओर ध्यान नहीं देते।

तुम शराब पी रहे हो। जीवन मे पहली बार तुमने आज शराब पी है। याद है जिस दिन तुमने पहली बार मिलि को

हिमाद्रि विह्वल स्वर मे

मिलि

लडकी मिलि बनकर खडी होती है। हिमाद्रि धीरे धीरे

उसके पास आता है।

हिमाद्रि मिलि।

मिलि क्या है ?

हिमाद्रि और पास आता है। मिलि को ध्यान से देखता है मानो कुछ जानना चाह रहा हो। मिलि की आखों मे भय है।

क्या बात है हिमाद्रि ? बोलो !

हिमाद्रि तुम कहा गयी थी ?

मिलि डाली के घर। क्या ?

हिमाद्रि बडी रात हो गयी है न ?

मिलि बडी रात ? मान ?

हिमाद्रि बारह बज रहा है। तुम्हारे मभी डडी सब सो चुके है।

मिलि बनावटी स्वाभाविकता से

अच्छा ? तो क्या हुआ ? मैं तो खाकर आयी हूँ। मैं कह ही गयी थी कि मुझे देरी होगी। डॉली की बथ डे पार्टी थी न !

हिमाद्रि ओ ! पार्टी थी।

मिलि हल्की हँसी

पार्टी मतलब, दो चार घनिष्ठ इष्ट-मित्र थ। तुम अभी तक जग रहे हो ?

मिलि आँचल से मुह ढक्कर बातें कर रही है।

हिमाद्रि मैं पढ रहा था।

मिलि ओ ! अच्छा गुडनाइट। चलू सो जाऊँ, बडी नींद आ रही है।

जाने लगती है

हिमाद्रि मिलि, सुनो।

मिलि वहीं रुककर

क्या ?

हिमाद्रि इधर आओ जरा।

मिलि धीरे धीरे पास आती है।

क्या बात है, बोलो तो ?

मिलि क्या ? क्या हुआ ?

हिमाद्रि जानती हो, घर म सब लोग सो गये हैं ?

मिलि हाँ—तो क्या हुआ ?

हिमाद्रि जरा हँसकर

ऐसे समय तुम मुझसे गुडनाइट करके, इस तरह भागी जा रही हो इससे ताज्जुब हो रहा है।

मिलि सिर नीचा करके

मैं बहुत थक गयी हूँ। मैं

हिमाद्रि हठात् मिलि का मुह दोनों हाथों से पकड़कर ऊपर करता है। मिलि के मुह छुडाने से पहले ही हिमाद्रि झुककर लबी सास लेता है और फिर चौंककर पीछे हट जाता है। मिलि डर जाती है।

हिमाद्रि मिलि---मिलि---तुमने शराब पी है ?

मिलि किसने कहा ?

हिमाद्रि इसी डर से भाग रही थी ?

मिलि हिमाद्रि मैं पार्टी म जरी-सी भी न लेती तो बड़ी अभद्रता होती

हिमाद्रि अभद्रता ? शराब न पीना अभद्रता है ?

मिलि इसे शराब पीना नही कहते हिमाद्रि। डॉली के ऑनर म एकाध ड्रिंक ले लेना न लेने से डॉली

हिमाद्रि केवल देखता रहता है। मिलि डर के मारे बेचैन हो जाती है।

मैं नहीं जाना चाह रही थी मैंने बहुत ना किया पर वे लोग जबरदस्ती मुझे

हिमाद्रि जबरदस्ती तुम्हे ?

मिलि अक्सर ही इस तरह जबरदस्ती करते हैं माने न पीने से एसी आफेन्स मानते हैं कि हिमाद्रि प्लीज तुम

हिमाद्रि घूम जाता है। मिलि उसे जबरदस्ती अपनी ओर घुमाती है। दोनों हाथों से उसे कसकर पकडकर वह बच्चों की तरह अनुनय करती है।

मैं अब फिर कभी नहीं पीऊँगी कभी नहीं गॉड प्रामिस हिमाद्रि गॉड प्रामिस

बहुत जोर से बोल गयी थी---फिर सम्हलकर धीरे से

कभी भी नही हिमाद्रि प्लीज, तुम गुस्सा मत हो हिमाद्रि

खीज।

हिमाद्रि शान्त स्वर में
मेरे गुस्सा होने न होने से क्या आता-जाता है मिलि? तुम्हारी सोसाइटी में जा करना जरूरी है, उसे तुम मेरी खातिर क्या

मिलि करुण स्वर में
हिमाद्रि। ऐसा मत कहो। तुम जानते हो कि ऐसे करने के बजाय यदि तुम मेरे गाल पर दो चांटे मारो तो मेरे लिए ज्यादा अच्छा हो

हिमाद्रि अचानक, जिज्ञासा के स्वर में
मिलि तुम्हारी ऐसी बातें सुनकर तो लगता है कि तुम मेरे शरीर- से गुस्से से भी बहुत-बहुत डरती हो। पर

मिलि सच मैं बहुत डरती हूँ

हिमाद्रि पर पार्टी में, अपनी सोसाइटी में तुम्हें मेरी बात एकदम भूल जाती है? कुछ भी याद नहीं रहता

मिलि कौन कहता है?

हिमाद्रि उस समय तुम मेरे अच्छा या बुरा लगने की रत्ती भर भी परवाह नहीं करती। तुम्हारी नजरों में उसकी कानी कौड़ी भी कीमत नहीं होती। मानो तुम्हारे जीवन में मेरा कोई अस्तित्व ही न हो।

मिलि हिमाद्रि के मुह पर हाथ रखते हुए
नहीं ऐसा मत कहो। तुम नहीं जानते तुम मेरे लिए क्या हो। तुम समझ नहीं पा रहे हो तुम्हें जानने के बाद से मेरे इतने दिनों की जिन्दगी—यह टेनिस, स्विमिंग, ड्राइविंग, पार्टी, पिकनिक, यह सब

हिमाद्रि किन्तु तुम यही सब तो चाहती हो मिलि! इसीलिए आज पार्टी में जाकर ड्रिंक किये बिना तुमसे नहीं रहा गया

मिलि मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ हिमाद्रि। मुझे थोड़ा समय दो लगता है पता नहीं आज मुझे कुछ नहीं समझ में आ रहा है कल शाम को तुम्हारे साथ बाहर चलूँगी नाराज मत हो हिमाद्रि तभी सभी सब कुछ समझाकर कहने की कोशिश करूँगी। चलोगे न? बोलो, चलोगे न?

हिमाद्रि चुप रहता है

बोलो न, चलोगे तो?

हिमाद्रि ठीक है, चलूगा ।

मिलि हिमाद्रि गुस्सा मत हो प्लीज । तुम गुस्सा रहोगे तो मैं सो नही पाऊँगी । कल दिन भर मुझे एक पल के लिए भी चैन नही मिलेगा । बोलो

हिमाद्रि तुम भी मुझे कुछ समय दो मिलि । इतनी जल्दी मैं भी कुछ नही कह सकता ।

मिलि धीरे धीरे हाथ छोड़ देती है ।

मिलि अच्छा अच्छा । कल शाम को चलोगे न ?

हिमाद्रि हा ।

मिलि दोनो हाथ उठाकर हिमाद्रि की ओर बढती है, फिर रुककर दो कदम पीछे हटकर, मुड़कर जल्दी से चली जाती है।

सातू रुँधे स्वर मे

ना यह ज्वाला

रुक जाता है

कार्तिक जरा देर बोलने की प्रतीक्षा करके

काहे की ज्वाला ?

सातू यही, आप लोगो के प्रेम की ।

कार्तिक फिर रुककर

क्या, क्या हुआ ?

सातू यह ज्वाला आती कहाँ से है ?

शशि जिन लोगो ने प्रेम किया है उनकी बेवकूफिया से ।

सातू सोचकर

मतलब—प्रेम बेवकूफ लोग ही करते हैं ?

शशि नही प्रेम करके लोग बेवकूफ बन जाते हैं ।

सातू सोचकर

आइ सी ।

हिमाद्रि इस बीच लौटकर अपना गिलास खाली कर चुका है । और ढालता है । गिलास को देखता रहता है ।

शशि , हँह, आइ सी ।

सातू सोचकर

क्यो क्या हुआ ?

पगली थी ?

शशि आप कभी प्रेम म पडे भी हैं तो सी कीजिएगा ?
सातू सोचकर
ना, सो नही पडा
जरा देर बाद
पर लछमी उसका विर
कातिक लछमी ?
शशि लछमी कौन है ?
सातू एक लडकी
जरा रुककर
मर गयी ।
शशि चला वला टनी !
कातिक आह शशि बाबू
शशि चुप रहता है । सातू भी कुछ नहीं कहता । हिमाद्रि
अचानक अपने आप ही खी खी करके हसने लगता है ।
तुम्ह क्या हुआ, हिमाद्रि ?
हिमाद्रि देखिए, कसे प्रेम से पी रहा हूँ—बिना पानी मिलाये नीट शराव
क्या है, ह्विस्की ?
कातिक हाँ ।
हिमाद्रि अच्छा, शराव पीने मे क्या बुराई है ?
कातिक यह सवाल पूछने के लिए तुम्ह और कोई नही, मैं ही मिला भया ?
लडकी पर रोशनी पडती है ।
हिमाद्रि पर ज्यादा पीना ठीक नही है ।
हिमाद्रि की आखें कहीं बहुत दूर लगी हैं । धीरे धीरे गिलास
नीचे रखता है ।
कातिक क्यो ?
हिमाद्रि ज्यादा पी लेने पर टहलना चाहिए ।
शशि टहलना चाहिए ?
लडकी आखिरी दिन की बात याद आ रही है ? आखिरी दिन की ?
हिमाद्रि गाडी नही चलानी चाहिए ।
शशि गाडी नहीं चलानी चाहिए ?
कातिक ओ ! तो फिर मुझे कोई चिन्ता नही है । गाडी है नहीं सो

निश्चित भाव से चुसकी लेता है।

हिमाद्रि बडबडाते हुए
ऐसा नही होता ! एसा नही हो सकता।
कोई ध्यान नहीं देता। लडकी मिलि हो जाती है। आखें सूनी हैं। हिमाद्रि पास आता है।
ऐसा नही होता मिलि ! एसा नही हो सकता। दो सालो से बहुत बार बहुत तरह से कोशिश करके देख चुका हूँ यह होनेवाला नही है।

मिलि सूने भाव से
मैं तुम्० एकदम अच्छी नही लगती।

हिमाद्रि नही, मिलि, नही। तुम जानती हो यह बात नही है। मैंने चेष्टा करने मे कुछ भी नही उठा रखा

मिलि चेष्टा ? हा, तुमने चेष्टा की है पर मुझे एकदम बदल देने की अपने समाज अपने जीवन मे एकदम मुझे मिला देने की, उसमे एकदम ढाल देने की। इसमे तनिक सा इधर-उधर होने पर तुमने मुझे दूर कर दिया।

हिमाद्रि मिलि।

मिलि कुत्ते की तरह मुझे दुत्कार दिया। कुत्ते की ही तरह मैंने फिर स तुम्हारे पास आने की चेष्टा की बार-बार मैंने तुमसे भीख माँगी पर तुमने एक बार भी मेरे जीवन मेरी परिस्थितियों को समझने की चेष्टा नही की।

हिमाद्रि नही की ?

मिलि कब की ? तुमने मेरी कोई भी बात नही मही किसी भी बात के लिए मुझे माफ नही किया। क्या करोगे ? तुमने तो कभी मुझे प्यार नही किया

हिमाद्रि यह झूठ है मिलि, तुम जानती हो। तुम्हारे और मेरे जीवन, रहन सहन म इतना बडा अन्तर है कि

मिलि जीवन रहन सहन अतर। तुम्हारे लिए तुम्हारा जीवन और रहन-सहन ही सब कुछ है। मैं कुछ नहीं हूँ। तुम्हे मेरी कोई जरूरत नही है।

हिमाद्रि जरा रुककर

तुम जब कुछ समझना ही नही चाहती, तो मैं चलू ।

मिलि — *बिजली की तरह खडी होकर*
कहाँ जाओगे ?

हिमाद्रि — तुमसे मतलब ।

मिलि — नही । तुम कही नही जाओगे । मैं तुम्हें नही जाने दूगी ।

हिमाद्रि — *अपमानित होकर*
मिस राय आपके डैडी की नौकरी से मैंने इस्तीफा दे दिया है । मेरा सूटकेस बाहर के कमरे मे रखा है । आपके साथ शायद फिर मुलाकात न हो । आप लोगो ने मुझ पर जो कृपा की, उसके लिए आभारी हूँ । धन्यवाद । नमस्कार ।

हर बात हथौडे की चोट की तरह मिलि को पीडा पहुँचाती है । हिमाद्रि जाने को घूमता है । मिलि दोनो हाथ से सिर पकडकर चलने की कोशिश करती है । हठात् रुककर—

मिलि — हिमाद्रि ।

हिमाद्रि — बोलिए, मिस राय ।

मिलि — *कष्ट को छिपाते हुए*
तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे घर जाऊँगी तुम जानते हो कि मैं फिर से

हिमाद्रि — उससे कोई लाभ न होगा । बार-बार मुझसे यह सब नही सहा जाता । इसलिए इस बार मन एकदम पक्का कर लिया है । दूसरा इतजाम भी कर रखा है ।

मिलि — *डरी-सी*
क्या मतलब ?

हिमाद्रि — मतलब, मेरे घर जाने से कोई लाभ न होगा । मैंने मकान बदल दिया है । वह जगह तुम्हे खोजे भी न मिलेगी ।

मिलि — क्या तुम हमेशा के लिए मुझे अपने से दूर कर देना चाहते हो ?

हिमाद्रि — नही मैं खुद दूर चला जा रहा हूँ ।

मिलि — हाँ, जाओ । तुम्हें क्या ! तुम्हारी जिन्दगी खूब मजे मे कटेगी । तुम्हारी अपनी दुनिया है ।

हिमाद्रि — तुम्हारी भी तो अपनी अलग दुनिया है ।

मिलि — नही, मेरी अब कोई अपनी दुनिया नही है । तुम्हारी दुनिया को मै

पूरी तरह् नही स्वीकार कर सकी, यह सही है, पर अपनी दुनिया मैंने खो दी है। वसे तुम्हे इससे क्या फर्क पडता है।

हिमाद्रि जरा रुककर
मैं चलू।

मिलि हिमाद्रि, अपना पता दे जाओ।

हिमाद्रि ना।

मिलि मैं वहाँ जाऊँगी नही। मैं तुम्ह वचन देती हूँ कि पूरी तरह तुम्हारे अनुरूप अपन आपको ढाल बिना, मैं वहा नही जाऊँगी। बस, तुम अपना पता बता जाओ।

हिमाद्रि नही। चलू

मिलि हिमाद्रि।
हिमाद्रि उसकी ओर देखता नहीं। गला दबाकर उन्मत्त से स्वर मे—
ठीक ह, तुम यदि मुझे पता दिये बिना ही चले जाओगे तो मैं ह्विस्की मँगाकर पीयूगी—पीयूगी और पीती ही रहूँगी तब तक जब तक कि मैं जलकर राख नही हो जाऊँगी

हिमाद्रि कान्ग्रैचुलेशन्स मिस राय। आपकी दुनिया बनी रहे।
हिमाद्रि खिडकी की ओर चला जाता है। मिलि अँधेरे मे गायब हो जाती है।
हिमाद्रि खिडकी मे घूमकर खडा होता ह। उसकी आँखो मे विह्वल पीडा का भाव है। अचानक आगे आकर सातू और शशि का कधा पकडकर झकझोरने लगता है।

सातू बाबू! शशि दा! सुना! ज्यादा पीकर कभी भी गाडी मत चलाइएगा। ज्यादा पीकर चलाने स न जोर से चलाने की इच्छा करती है ज्यादा पी लने पर होश-हवास तो दुरुस्त रहता नही। खूब जोर स चलाने का मन करता है—पचास मील—साठ मील—पैंसठ मील—और फिर उसके बाद
हिमाद्रि हाफने लगता है।
उसके बाद पेड से धक्का लगकर गाडी चकनाचूर हो जाती है शरीर चिथडे चिथडे हो जाता है—ऐसा कि पहचाना भी न जा सके—शशि दा एकदम भुरकुस ओह! क्यो? क्या? मैं

इस बीच शशि और सातू उठकर हिमाद्रि को पकडते हैं।
कार्तिक भी उठता है।

...व हिमाद्रि, हिमाद्रि ! क्या हुआ ? बैठो—बैठो—
हिमाद्रि और जोर से बोले जाता है।

...द्रि क्यो ? क्यो मैंने ? क्यो ?

...र्तिक बैठो हिमाद्रि, बैठो।

सातू यह लीजिए एक घूट पीजिए तो।
सातू जबरदस्ती उसे एक घूट पिलाता है। हिमाद्रि खासने लगता है। फिर अचानक शात हो जाता है।

हिमाद्रि भरे भरे स्वर मे
एक्सीडेंट था शशि दा एक्सीडेंट स्यूसाइड नही। स्यूसाइड क्या होगी। एक्सीडेंट। हा न ?
कोई उत्तर नहीं देता। हिमाद्रि थका हुआ सा बैठा रहता है। शशि और कार्तिक अपनी अपनी जगह जाकर बैठ जाते हैं। सातू दरवाजे पर जाकर खडा होता है। लडकी पर रोशनी पडती है।

लडकी आम का पत्ता जोडा-जोडा। मारा चाबुक दौडा घोडा। छोट रास्ता खडी हो बीबी। आता है यह पगला घोडा। पगला घोडा
अचानक खिलखिलाकर हँस पडती है।
हँसते हँसते
पगला घोडा—घोडा पगला गया है—हर समय पगलाया ही रहता है—हर समय
दरवाजे के बाहर आकर सातू एक ढेला उठाकर खींचकर मारता है।

सातू ले बेटा।
कुत्ता दो बार भों भो करता है जैसे उलटकर वार का बदला लेने की कोशिश कर रहा हो। सातू इस बार बडा ढेला खींचकर मारता है। एक बार भो भों करके कुत्ता एकदम शात हो जाता है मानो मर गया हो। सातू हाथ झाडते झाडते भीतर आता है।

लडकी मुनुआ।

फिर आकर बैठा है।

सातू वही कुत्ता है। फिर आकर बैठा है।
लडकी ना, यह दूसरा कुत्ता है। मुलुआ तो मर गया—कब का।
कार्तिक जहन्नुम म जाय।
सातू हाँ, और क्या।
लडकी मरेगा तो है ही। लछमी के मर जाने पर मुलुआ कैसे जिन्दा रह सकता है।
सातू जानते हैं, उस कुत्ते को मैं पालने की सोच रहा था।
कार्तिक किस कुत्ते को ?
लडकी मुलुआ को।
सातू उसी नमकहराम कुत्ते को जिसकी बात मैं कर रहा था।
कार्तिक हाँ—हाँ—आप
शशि दो साल पहले जिसके साथ आपका पुर्नमिलन हुआ था ?

इस बार सातू स्वाभाविक अट्टहास नहीं करता।

सातू हाँ, पुर्नमिलन ही कह लीजिए। कितना बुलाया पर वह आया ही नही।
शशि कहा से नही आया ?
सातू ऐं ?
शशि पूछ रहा था कि पुर्नमिलन कहाँ हुआ था।
सातू ऐसे ही—रास्ते मे—
लडकी क्या ?
सातू नहीं, रास्ते म नहीं—

जरा रुककर

श्मशान मे। आसनसोल जिले मे, एक ऐसे ही गाव के सून श्मशान म

सातू घूमकर खिडकी के पास जाता है। बाहर देखता रहता है। कार्तिक शशि हिमाद्रि अन्धकार में धूमिल से हो गये हैं। लडकी झुककर सातू को देखती रहती है।

लडकी फुसफुसाकर

लछमी। लछमी। लछमी।

सातू लछमी।

लडकी लछमी बनकर खडी होती है। सातू घूमकर उसके पास आता है।

लछमी !

लछमी हँस पडती है।

लछमी बाबूजी, आप हम लछमी क्या पुकारत है ? हमारा नाम तो लक्ष्मी है

सातू तू मुझे बाबूजी क्यो कहती है ? मेरा नाम तो

लछमी बा बा। भला हम आपका नाम कसे ले सकते हैं ?

सातू हसकर

क्यो लछमी ? मैं तेरा आदमी हू क्या कि तू मेरा नाम नही ले सकती ?

लछमी दूसरी ओर देखती रहती है। उसके मुख पर आतरिक आनन्द की आभा है मानो आदमी शब्द को बार-बार मन-ही-मन दोहरा रही हो।

क्या हुआ ? बोलो।

लछमी धीरे धीरे घूमकर देखती है।

लछमी नही।

सातू तब ?

लछमी उससे बहुत ज्यादा।

सातू अरे बाप रे ! आदमी स भी ज्यादा ! वह क्या होता है ?

लछमी पता नही।

सातू तुझे तो कुछ भी पता नही होता। हर बात मे—पता नही।

लछमी हम पढे लिखे थोडे ही हैं बाबूजी।

सातू हूँह। पढ लिख लेने से ही क्या सब कुछ जाना जा सकता है ?

लछमी बाप रे। पढ लिख के भी न जाना जायगा ?

सातू रूमाल निकालकर मुह पोछता है।

सातू घटा जाना जायगा।

लछमी हाथ बढ़ाकर

दो।

सातू क्या ?

लछमी रूमाल। धो दें।

सातू आज ही तो धुला हुआ दिया है। फिर क्या धायेगी ?

लछमी दो न बाबूजी। हम दूसरा साफ रूमाल देत हैं।

सातू देख लछमी, मैं दिन भर धूल धक्कड म काम करता हूँ। इतनी सफाई

मुझे नही पोसायेगी ।

लछमी करुण स्वर मे

हम अच्छा जो लगता है ।

सातू तू तो मुझे चौपट करके छोडेगी लछमी ।

लछमी चौंककर

हम ?

सातू और नही तो क्या ? एकदम निकम्मा बना देगी। अपने हाथ से कुछ करने ही नही देती।

लछमी निश्चिन्त होकर

ओ !

बाहर कुत्ता दो बार आवाज देता है ।

सातू तेरा भक्त आ गया। जा, उसे खाने को दे आ।

लछमी हँसकर

बाबूजी मुलुआ तुम्हे फूटी आख नही सोहाता न !

सातू हँसकर

अरे, पर उपाय क्या है ? उसे तो देखना ही पडेगा। मैंने उसे देखना छोडा तो तू मुझे ही छोड देगी ।

लछमी जाने के लिए मुडी थी, अचानक चौंककर घूमती है ।

लछमी बाबूजी ।

सातू क्या हुआ ?

लछमी जरा देर उसे देखती रहती है ।

लछमी बाबूजी, हम तो तुम्हे मर के ही छाडेंगे । हा, आपै छोड दो तो

सातू मुझे तो दोना मे से किसी का चास नही दिखता । तुम अच्छी खासी तगडी हो, जल्दी मरने से रही । रहा मैं, सो तुझे छोडकर मेरा गुजारा कसे होगा ?

लछमी का चेहरा आनन्द से चमक उठता है। कुत्ता फिर आवाज देता है। लछमी जल्दी से चली जाती है ।

लछमी मुलुआ मुलुआ आ आ ।

सातू लौट पडता है। भीतर धीरे धीरे प्रकाश होने लगता है। हिमाद्रि चौकी के कोने पर सिर रखे जसे सो गया है ।

कार्तिक तारा तारा मा।

शशि कार्तिक बाबू, आपकी मात भक्ति से तो तबियत बोर हो गयी।

कार्तिक भक्ति ? भक्ति कहा दिखी आपको ?

शशि भक्ति नही है तो फिर बार बार यह हाक क्या लगाते हैं ?

कार्तिक यह हांक लगाकर मैं दिमाग की गैस बाहर निकाल देता हूँ।

शशि गस बाहर निकालने की जरूरत क्यो पडती है ?

कार्तिक सेफ्टी वॉल्व। न निकालने से दिमाग फट गया तो ?

सातू खिडकी पर खडा है।

शशि फट जायगा तो फट जाय। उससे क्या दुनिया इधर की उधर हो जायगी ?

कार्तिक अरे, शशि बाबू सब चारो ओर बिखर जो जायेगा। दिमाग म जो कुछ भरा है न, सब चारों ओर

शशि तो कौन बडा भारी नुकसान हो जायेगा !

कार्तिक मेरा क्या नुकसान होगा। आप ही लोग परेशान होंगे, नाम धरेंगे और क्या। कहगे कि बुडढे की खोपडी मे न जाने कहां का कूडा कचरा भरा था।

शशि आप फिर फालतू बातें करने लगे।

कार्तिक अच्छा बाबा अच्छा, अब और नही करूंगा।

जरा रुककर जोर से

तारा तारा मा।

शशि चिढ़कर गिलास उठाकर एक घूट पीता है और जोर से गिलास वापिस रख देता है।

सातू धीरे धीरे

कार्तिक बाब आपका मोची ही मजे म रहा।

कार्तिक अच्छा ! सो कैसे ?

सातू उसे कुछ मिला नही सो आराम से कुछ मिलने की आशा मे ही उसने सारा जीवन काट दिया। सबको ऐसा कहा नसीब होता है। हम कोई चीज हाथ लगी नही कि गोलमाल शुरू हुआ। हमम से कोई भी चीज को ठीक से रखना तो जानता नही। जसे बच्चे मिट्टी के खिलौने को तुरत तोड फोडकर टुकडे-टुकडे कर डालते हैं वस ही हम भी पल भर मे हाथ लगी चीज को चूर-चूर कर डालते हैं और फिर मैं मैं करके रोने बठ जाते हैं।

इस बीच लडकी पर रोशनी पडने लगी है।

कार्तिक आपने बात कुछ गलत नही कही, सातू बाबू ।

लडकी पर टूटे बिना पता कहाँ चलता है कि कुछ मिला था। बोलो पता चलता है ?

सातू अच्छा, हम लोग ऐसा क्यो करते हैं ?

कार्तिक क्या ?

लडकी खिलखिलाकर हँस पडती है

नही जानते ? पगला घोडा । पगलाया ही है । सब तहस-नहस कर रहा है ।

अचानक करुण स्वर मे

पगला घोडा, तुमने मुझे भी ऐसे ही तहस नहस क्या नही कर डाला ? ऐसे ही—लछमी की तरह ? मालती की तरह ? मिलि की तरह ? मैं क्या वपल जलूगी ही ? कभी जुडाऊँगी नही ?

कार्तिक तो आपका मतलब है कि मोची ही सबसे मजे मे था ? उसने कुछ पाया नही, इसीलिए ?

सातू जवाब नहीं देता। लडकी लछमी के रूप मे आगे आती है।

लछमी दबे गले से पुकारते हुए

बाबूजी ! बाबूजी !

सातू कौन ?

लछमी दरवाजा खोलो बाबूजी । हम लछमी हैं ।

सातू लछमी तू ? इतनी रात गये ?

लछमी सिर नीचा किये खडी रहती है, जवाब नहीं देती ।

आ, भीतर आ ।

लछमी एक कदम आगे आती है। सातू पास आता है।

क्या हुआ ?

लछमी चुप

कुछ बोलेगी भी या नही ?

लछमी टूटे अस्पष्ट स्वर मे

हम वहा और नही रह सकते बाबूजी ।

सातू क्यो, क्या हुआ ?

लछमी चुप

मालकिन बुरा वर्ताव करती हैं ?

लछमी गरदन हिलाकर ना करती है।

तब ? मालिक ? वे कुछ कहते हैं ?

लछमी इस बार भी ना करती है।

तब फिर क्या हुआ ? नौकर-चाकर तग करते है ? या बाहर क कोई ?

लछमी हर बार सिर हिलाकर अस्वीकार करती है।

अधीर होकर

तब फिर वहा क्या नही रह सकती ?

लछमी हमे अपने पास रख लो बाबूजी।

सातू अपने पास रख सकता तो क्या वहा भेजता ?

लछमी चुप रहती है।

बोल, रख सकता तो क्या यह इतजाम करता ?

लछमी चुप रहती है।

सुन, तू थोडे दिन और देख ले। जान-पहचान के अच्छे परिवार म तेरा इतजाम करवा दिया ह। अच्छी तरह काम करेगी तो आराम से जि दगी कट जायगी। तू तो काम करने से घबडाती नही।

लछमी हमे अपना काम करने दो बाबूजी।

सातू चिढकर

फिर वही बात। कितनी बार कह चुका हूँ कि इस तरह तुझे अपने पास रखने से मेरा काम काज सब चौपट हो जायेगा। एक भी कट्रैक्ट नही मिलेगा। तब खचा कस चलेगा ? और तुझे ही कहा से खिलाऊँगा ?

लछमी खडी होकर चुपचाप रोने लगती है।

नरम स्वर में

सुन लछमी—

लछमी के कधे पर हाथ रखता है। लछमी उसके पर के पास बठ जाती है।

लछमी हमें अपने पास रख लो बाबूजी। हम एकदम छिप के रहेंगे, कोई न जान पावेगा। हम कभी तुम्हरे बठका मे पैर न रखेंगे। तुम हमे छूना मत, हमसे बात भी मत करना, कुछ न कहेंगे। बस हमे हमे अपने पास

रख लो बाबूजी। अपना काम करते दो हम कोई स न कहेंगे कोई नही जानेगा

सातू तेरा दिमाग खराब हो गया है ? मेरा लम्बा चौड़ा मकान है क्या—जो तुझे उसमे छिपाकर रखूगा ? तू म, झापड़ी म, तू कहाँ छिपेगी ? जो देखेगा वही पूछेगा—यह कौन है ? तब मैं क्या जवाब दूगा ?

लछमी कह देना—मेरी नौकरानी है।

सातू देख, ये सब बातें हम लोग बहुत बार कर चुके हैं। मैं अकेला आदमी—तुझ जैसी औरत को नौकरानी रखे हूँ, यह देखकर लोग मेरे बारे म क्या सोचेंगे, बता ? इससे मेरे काम पर असर पड़ेगा।

लछमी कोई नही देख पायेगा बाबूजी, कोई नही। हम छिपे छिपे रहेंगे। हम भगाओ मत बाबूजी हमे अपने पास रहने दो बाबूजी

लछमी सातू के दोनो पर पकड़कर जोर से झकझोरती है। सातू चिढ़कर हट जाता है। लछमी गिर पड़ती है।

सातू तू ऐसी पागलो जैसी बातें करती है, जिसका ठिकाना नही।

लछमी पड़ी-पड़ी रोने लगती है। सातू उसे उठाता है।

उठ, उठ लछमी, घर जा।

लछमी घर ?

सातू हा, वही तेरा घर है लछमी। वे लोग बड़े अच्छे आदमी हैं पैसे वाले भी हैं। माधव बाबू बहुत बड़े ठीकेदार है। ऐसे घर म रहकर तेरा भला ही होगा लछमी।

लछमी भला होगा ?

सातू कोशिश करके देख न, कोई तकलीफ नही होगी। काम मे मन लगा। भुलुआ तेरे पास है ही, उससे भी मन लगा रहेगा। धीरे-धीरे तू सब कुछ भूल जायेगी।

लछमी भूल जायेंगे ?

सातू हाँ, लछमी, हा। दुनिया मे बहुत कुछ भूलना पड़ता है, भूल भी जाता है।

लछमी तुम हमे एकदम भूल गये हो बाबूजी ?

सातू फिर वही फालतू बातें। जा, घर जा।

लछमी तुमने हमे क्यो बचाया था बाबूजी ? जहाँ थे, वही मर क्यो नही जाने दिया बाबूजी ?

सातू लछमी !

लछमी बोलो न बाबूजी जवाब दो। गुंडे तो ऐसी न जाने कितनी लड़किया का चुरा कर लाते हैं। लड़कियो को खरीदते बेचते हैं, इसी का रोज-गार करत ह। तुम हमे क्यो ले आये ? तुम क्या

सातू लछमी !

लछमी तुमन काहे उन लोगा के साथ मार-पीट की ? तुम काहे छुरा देखकर डरे नहीं ? जान का डर तुम्हे काहे नही लगा ?

सातू लछमी, अब इन सब बाता को

लछमी बोलो न ' बोलो न ? हमारे लिए, सब हमारे लिए किया था न ?

सातू मान ला किया ही हा तो ?

लछमी तो फिर आज हम अपन पास स दूर काहे भगा द रह हो बाबूजी ?

सातू इस भगाना कहत हे ?

लछमी चुप रहती है।

जा, अब घर लौट जा। जा।

लछमी घूमकर अंधों की तरह पर घसीटते घसीटत चली जाती है। उसके चले जाने तक सातू उसे देखता रहता है।

कार्तिक खाली गिलास को घूमा फिराकर देखता है

बोतल क्या खाली हो गयी भैया ?

कोई जवाब नहीं देता।

ओ सातू बाबू !

सातू चौंककर

एँ !

कार्तिक आप कहाँ थे ?

सातू आगे आकर

यहीं तो।

कार्तिक बोतल खाली हो गयी ?

सातू नहीं, अभी तो है।

ढालता है। खुद भी लेता है।

शनि बाबू, आपने उस समय एक प्रश्न पूछा था। अब मैं एक प्रश्न पूछू ?

शनि हाँ-हाँ, बड़ी खुशी स। पर उत्तर नही पाइएगा।

सातू क्यो ?

शशि इसलिए कि किसी भी प्रश्न का उत्तर होता ही नही।

कार्तिक आप पूछिए न सातू बाबू।

सातू मान लीजिए मान लीजिए आपको कोई कीमती हीरा रास्ते मे नाली म पडा मिल जाता है। आप उसे उठा लाते ह पर घर लाने पर लगता है कि इतना कीमती हीरा घर मे रखने लायक आपकी सामर्थ्य नही है। इसलिए आप उसे

कार्तिक हीरा कीमती था इसलिए ? या उसे रखने की सामर्थ्य नही थी, इसलिए ?

सातू जरा रुककर

अच्छा ऐसे ही सही। आप उसे बडे जतन से कुछ दिनो के लिए अपने किसी अच्छे दोस्त के पास रख देते हैं ऐसे दोस्त के पास जो उसे रख सकता है जिसके पास उसे रखने की जगह है

कार्तिक कुछ दिनो के लिए जतन से रख देते हैं या दे देते हैं ?

सातू रुककर

अच्छा, मान लीजिए दे ही दिया। वहा अच्छी तरह रह सकेगा यह सोचकर दे ही दिया।

कार्तिक अर्थात् उससे छुट्टी पाई।

सातू नही।

कार्तिक अच्छा बाबा, अच्छा, दे ही दिया। आगे बोलिए।

सातू पर वह उस हीरे का दुरुपयोग करता है। अपने स्वार्थ के लिए वह उसे किसी बडे आदमी को भेंट दे देता है। वह बडा आदमी उस हीरे से खिलवाड करता है और हीरा घूम फिरकर फिर उसी गदी नाली मे पहुँच जाता है।

कार्तिक आदमी को आदमी ही रहने दीजिए न, उसे फालतू हीरा फीरा क्यो बनाते हैं ?

सातू चुप रहता है।

आपका सवाल क्या है ?

सातू क्या उसे उठाकर लाना गलत था ? या उसे किसी और को देना गलत था ?

कार्तिक गलत ? अरे सातू बाबू आदमी जो कुछ भी करे वह गलत ही होता

है। इसलिए यह गलत शब्द कोई अर्थ नही रखता।

सातू   तब उसे क्या कहूँ ? दोष ? अपराध ?

कार्तिक   यह सब एक ही बात है। असल म आदमी का आदमी होना ही सबसे बडा अपराध है।

लडकी पर पुन प्रकाश पडता है।

शशि   कार्तिक बाबू आप फिर फालतू बातें करने लगे।

कार्तिक   फालतू बातें ? तो जाने दीजिए तब फिर—तारा तारा माँ।

सातू कुछ सोचते-सोचते दरवाजे के पास जाता है। अचानक झुककर खडा हो जाता है।

सातू   आ आ —चू चू चू चू—मुलआ। मुझे पहचान नही पा रहा है ? आ आ, चू चू

लडकी   वह तो नही आयेगा। कसे आयगा ? लछमी जल जा रही है। उधर जल रही है। वह क्या आयेगा ?

सातू   मुलू ! मुलुआ !

कार्तिक   अभी तो लकडी से मारा, अब फिर पुचकार रहे है। बात क्या है सातू बाबू ?

लडकी अ धकार मे खो जाती है। सातू सीधे खडा होकर घूम कर देखता है। उसकी दोनो आखें विचित्र ढग से जल-सी रही हैं। मुह पर बेचनी की हँसी है। हँसी ऐसी, मानो हँसी का मुखौटा लगा रखा हो। सातू अचानक कार्तिक के पास आता है। झुककर कार्तिक के चेहरे के पास चेहरा ले आकर फुसफुसाकर बातें करने लगता है।

सातू   बात ? सुनिएगा ? बात यह थी कि एक बार आसनसोल जिले के एक शहर के एक खास मुहल्ले के एक खास मकान में एक खास कमर म में एक खास काम मे लगा था। बगल म एक कमरे म एक लडकी मौत से लड रही थी। उसे टी० बी० हो गयी थी और कोई एक खास बीमारी भी थी। मैं जब देखने गया तब वह मर चुकी थी। मर न गयी होती तो देखने क्यों जाता, आप ही बतलाइए ? न जान कितने ही लोग मरते हैं, कहा तक देखा जाय ? एकदम मर गयी थी इसीलिए गया

गिलास उठाकर एक साथ ढेर सी पी जाता है। उसके बाद फिर पहले की ही तरह झुककर अपनी बात चालू रखता है।

जाकर क्या देखता हू कि एक आवारा कुत्ता उसके बगल म बठा है, किसी को पास जाने ही नहीं देता। भला यह भी कोई बात थी। हम कई लोगों न मिलकर कुत्ते को खदेडकर बाहर किया। फिर कफन काठी लाकर राम-नाम सत्य है' करते करते इसी तरह के एक सूने श्मशान म ले जाकर

एक घूट और पीकर गिलास नीचे रख देता है

न जाने क्या, लोगों ने मुझे ही आग देने को कहा। न जाने क्या मेरे मन ने भी कहा कि मुझे ही आग देनी चाहिए। पर जसे ही मैं आग देकर घूमा, वह कुत्ता

बाहर कुत्ता जोरों से रो उठता है। सातू पागल की तरह चिल्लाता हुआ एक ही छलाग मे बाहर आ जाता है और पत्थर खींच-खींचकर कुत्ते को मारने लगता है। साथ ही बोलता जाता है—

गट आउट! गेट आउट! गेट आउट, यू ब्लडी सूअर का बच्चा!

हिमाद्रि हडबडाकर उठ बैठता है। शशि चौंककर खडा हो जाता है। कार्तिक अपनी जगह पर वसे ही बठा रहता है।

हिमाद्रि क्या हुआ? सातू बाबू अरे ओ सातू बाबू

उठकर खडा हो जाता है।

कार्तिक हाथ से इशारा करते हुए

बठो बठो। कुछ नहीं हुआ।

सातू थोडी देर तक बाहर की ओर देखते हुए दरवाजे पर खडा रहता है। फिर जल्दी से भीतर की ओर जाता है।

हिमाद्रि!

हिमाद्रि एँ?

कार्तिक एक बार और उलट-पुलट आओगे?

हिमाद्रि हाँ, जाता हू।

कार्तिक जरा सातू बाबू को भी देख लेना।

हिमाद्रि अच्छा।

दरवाजे तक जाता है।

कार्तिक उन्हे छेडना मत। बस देख लेना।

हिमाद्रि घूमकर देखता है। फिर बिना कुछ बोले चला जाता है।

शशि क्या बात है कार्तिक बाबू ? हुआ क्या ?

अंधेरे मे ही लडकी खिलखिलाकर हस पडती है। उस पर रोशनी पडती है।

लडकी तुम नही जानते कि क्या हुआ ? नही जानते ? पगला घोडा। घोडा पगला गया है।

हसते हसते लोटपोट हो जाती है।

कार्तिक हुआ वही जो हर आदमी का होता है।

शशि हर आदमी को क्या होता है ?

कार्तिक पागलपन सवार हो जाता है हर आदमी रह रहकर पगला जाता है।

शशि जरा रुककर

आपको तो पगलाते नही देखा !

कार्तिक मेरे जीवन मे शायद कुछ ऐसा घटा ही नही कि पगलाता।

लडकी सच ? सच कह रहे हो ? पगला घोडा ने तुम्हारी ओर भी नजर नही डाली ? तुम्हारी ओर कभी नही गया ? मेरी ही तरह तुम भी हो ? सच ?

शशि क्या ?

कार्तिक ए ?

शशि आपके जीवन म कुछ घटा क्यो नही ?

कार्तिक क्या पता।

लडकी ऐसा क्या होता है ? इतनी ज्यादती क्या ? पगला घोडा सबको क्या नही देख पाता ? काना है क्या ? ओ, समझ गयी। उसकी आँखो पर पर्दा पडा रहता है न, इसलिए।

शशि अच्छा कार्तिक दा

कार्तिक बोलो।

शशि यह लडकी मरी कसे ?

लडकी यह जानकर क्या होगा ? क्या होगा ?

कार्तिक हाट फेल। हाट की ही कोई बीमारी थी।

शशि हाट की बीमारी ?

कार्तिक ऐनजाइना पेक्टोरिस।

शशि आ
जरा रुककर
सर्टिफिकेट म डाक्टर न यही लिखा होगा।

कार्तिक हा ।

शशि ओ !
जरा रुककर
यही सोच रहा था ।

कार्तिक ऐं ?

शशि मैंन कहा कि मैं यही सोच रहा था ।

कार्तिक ओ !
जरा रुककर
तारा तारा मा
एक घूट पीकर
क्या सोच रह थे ?

शशि यही कि लडकी मरी कैस ?

कार्तिक आ !

लडकी क्या कराग जानकर ? उससे क्या बनता बिगडता है
क्या रही ? मैंन जिन्दगी मे क्या पाया ? किसी को
बता सकता है ?

शशि आप जानते है ?

कार्तिक क्या ?

शशि फिर यह मरी कस ?

कार्तिक हा ।

शशि जरा रुककर
कसे ?

कार्तिक दम बन्द होन से ।
लडकी दोनों हाथा से गला पकड लेती है ।

शशि जरा रुककर
फासी लगाकर ?

कार्तिक हा ।

शशि आपको कस पता ?

कार्तिक डाक्टर ने बतलाया।

शशि डाक्टर ने आपको हिस्सा नही दिया ?

कार्तिक दिया था।

शशि *जरा रुककर*

आपन लिया नही ?

कार्तिक *जरा रुककर*

ना।

शशि *जरा रुककर*

क्यो ?

कार्तिक जरा-सा हसता है। फिर गिलास उठा लेता है।

कार्तिक तारा तारा ब्रह्ममयी मा।

लडकी अचानक जलती हुई आखो से कार्तिक की ओर देखती है।

लडकी तुम्हारे भीतर क्या भरा है ? तुम ऐसे ठडे, निर्विकार कैसे रह सकते हो ? तुम्हारे भीतर जलन नही होती ? पगला घोडा के अन्याय-अविचार स तुम्हार अन्दर धू धू करक ज्वाला नही उठती ?

शशि कार्तिक दा।

कार्तिक ऊँ ?

शशि मेरा नशा अब जोर कर रहा है।

कार्तिक अच्छा

रुककर

पर इस सत्य का पता कस चला ?

शशि लडकी के लिए मन मे दु ख हो रहा है।

लडकी दु ख ? मैं मर गयी हूँ इसीलिए ?

खिलखिलाकर हँस पडती है।

कार्तिक लडकी के लिए मरना जीना सब एक सा हो गया था। क्या फक पडता है ?

खडा होकर अँगडाई लेता है।

तारा तारा।

शशि लडकी जिन्दा नही रहना चाहती थी ?

कार्तिक क्यो चाहती ? वह तो जानती ही न थी।

शशि आ
जरा रुककर
सर्टिफिकेट म डाक्टर न यही लिखा होगा।

कार्तिक हा ।

शशि ओ !
जरा रुककर
यही साच रहा था ।

कार्तिक ए ?

शशि मैंन कहा कि मैं यही सोच रहा था ।

कार्तिक ओ !
जरा रुककर
तारा तारा मा
एक घूट पीकर
क्या सोच रह थे ?

शशि यही कि लडकी मरी कस ?

कार्तिक ओ !

लडकी क्या करोग जानकर ? उसस क्या बनता बिगडता ह ? मैं जिन्दा ही क्या रही ? मैंन जिन्दगी मे क्या पाया ? किसी को क्या दिया, कोई बता सकता है ?

शशि आप जानत है ?

कार्तिक क्या ?

शशि फिर यह मरी कस ?

कार्तिक हा ।

शशि जरा रुककर
कस ?

कार्तिक दम बन्द होन स ।

लडकी दोना हाथा से गला पकड लेती है ।

शशि जरा रुककर
फासी लगाकर ?

कार्तिक हा ।

शशि आपको कसे पता ?

कार्तिक डाक्टर ने बतलाया।

शशि डाक्टर ने आपको हिस्सा नही दिया ?

कार्तिक दिया था।

शशि **जरा रुककर**

आपने लिया नही ?

कार्तिक **जरा रुककर**

ना।

शशि **जरा रुककर**

क्यो ?

कार्तिक जरा सा हसता है। फिर गिलास उठा लेता है।

कार्तिक तारा तारा ब्रह्ममयी मा।

लडकी अचानक जलती हुई आखो से कार्तिक की ओर देखती है।

लडकी तुम्हारे भीतर क्या मरा है ? तुम ऐसे ठडे, निर्विकार कैसे रह सकते हो ? तुम्हारे भीतर जलन नही होती ? पगला घोडा के अन्याय-अविचार से तुम्हारे अन्दर धू धू करके ज्वाला नही उठती ?

शशि कार्तिक दा।

कार्तिक ऊँ ?

शशि मेरा नशा अब जोर कर रहा है।

कार्तिक अच्छा

रुककर

पर इस मरण का पता कैसे चला ?

शशि लडकी के लिए मन म दु ख हो रहा है।

लडकी दु ख ? मैं मर गयी हूँ इसीलिए ?

खिलखिलाकर हँस पडती है।

कार्तिक लडकी के लिए मरना जीना सब एक-सा हो गया था। क्या फर्क पडता है ?

खडा होकर अँगडाई लेता है।

तारा तारा।

शशि लडकी जिन्दा नही रहना चाहती थी ?

कार्तिक क्या चाहती ? वह तो जानती ही न थी।

कार्तिक पर उसमे भी कम तक्लीफ थोडे ही होती है ।

लडकी तक्लीफ ही तो मैं चाहती हूँ वही तो मुझे चाहिए । मुझे कोई तक्लीफ, कोई दद नही होता इसीलिए तो आपके पास जहर मागने आई हूँ । मैं मरना नही चाहती । मैं जि दा रहना चाहती हू—मैं दद चाहती हूँ, तकलीफ चाहती हूँ, पर

फिर हताश होकर

पर वह क्या किसी दिन होगा ? नही होगा । कभी नहीं होगा, मैं जानती हूँ । आप मुझे जहर दे दीजिए ।

कार्तिक नही ।

लडकी ठीक है, मत दीजिए । दूसरे और उपाय भी हैं।

घूम जाती है ।

कार्तिक सुनो ।

लडकी फिर घूमती है ।

लडकी क्या ?

कार्तिक तुम मेरी बात पर विश्वास क्या नही करती ?

लडकी आप कैसे जानेंगे कि मुझे कितनी तकलीफ है और इन बातो पर विश्वास करना मेरे लिए कितना कठिन है ।

कार्तिक तुम मुझे थोडा और समय दोगी ?

लडकी समय ? क्यो ?

कार्तिक ताकि मैं तुम्हें समझा सकू । तुम्ह विश्वास दिला सकू ।

लडकी धीरे धीरे सिर हिलाकर

सो नही हो सकेगा ।

कार्तिक उसके बाद तुम्हारी जो मर्जी आए करना । यदि चाहोगी तो मैं जहर भी दे दूगा ।

लडकी दीजिएगा ?

कार्तिक हा, दूगा । तुम मुझे सात दिन का समय दो । सात दिन के बाद इसी समय तुम आना । उस दिन यदि तुम्हे विश्वास न दिला सका तो जो चाहोगी, दूगा ।

लडकी ठीक ?

कार्तिक ठीक ।

लडकी अच्छा

जरा रुककर
दम्मू।

लड़की चली जाती है। कार्तिक देखता रहता है।

शशि तब? क्या?

कार्तिक एँ?

शशि कोई तकलीफ नहीं थी तब फिर क्यों मरी?

कार्तिक लगता है, शायद वह जिन्दा रहने का कोई कारण नहीं ढूंढ पाई—
जरा रुककर
बुद्धू उसे मालूम नहीं था न!

शशि क्या?

कार्तिक कि जिन्दा रहने पर सब संभव होता है।

लड़की पर रोशनी पड़ती है।

लड़की *क्या? क्या संभव होता है?*

कार्तिक और कुछ दिन यदि वह जिन्दा रहती

लड़की तो क्या होता? मैं और कुछ दिन जिन्दा रहती तो तुम मुझसे क्या कहते? बकवास एकदम बकवास

कार्तिक और कुछ दिन

लड़की क्या होता? तुम क्या मुझे मालती बना सकते? या मिलि? या लक्ष्मी? एकदम फालतू बात। उससे तो जो हुआ, वही अच्छा हुआ। यहां जल रही हूं न जले। जितनी मर्जी आये, जले।

शशि उसके कुछ दिन और जिन्दा रहने से क्या होता?

कार्तिक हो सकता है कुछ भी न होता। और कौन जाने, कुछ हो ही जाता। कौन कह सकता है।

लड़की मैं कह सकती हूँ। कुछ नहीं होता। बहुत देख लिया है। बहुत। कुछ नहीं होता।

कार्तिक सात्री एक बात मन में आती है।

शशि क्या?

कार्तिक *मान लो मेरी उस कहानी के मांची की तरह कोई उसके खाली मन को भी भर देता—कोई भी—बूढ़ा, काना, लँगड़ा, लूला कोई भी यदि उसके मन को भर देता—बहुत दिनों तक—सालों तक—*

लड़की वैसा कुछ नहीं हुआ कुछ नहीं कुछ भी नहीं। काश वैसा

होता

कार्तिक और वह लड़की किसी दिन यदि यह जान पाती तो भी क्या वह इस तरह जान देती ?

लड़की जान देती ?
हँस पड़ती है
तुम नहीं जानते ? क्यों ?

शशि कौन जाने। हो सकता है और तकलीफ पाती, फिर मरती।

लड़की हाँ, मरती। मालती की तरह—मिनि और लक्ष्मी की तरह। पर तब मरने की कोई सार्थकता होती। जिन्दगी में कुछ पाकर मरती।

कार्तिक क्या पता। शायद वही होता। सब प्रश्नों का उत्तर यदि आदमी के पास होता तो

शशि हँसकर
आदमी आदमी न होता

लड़की पगला घोड़ा—तुमने वैसा क्यों नहीं किया ? क्या मैं किसी का मन न भर सकी ? क्या कोई और मेरा मन न भर सका ? तुमने ऐसा क्यों नहीं होने दिया ? तुम्हारी आँखों पर पर्दा क्यों पड़ा रहता है ? क्यों ? बोलो

हिमाद्रि लौटता है, उसके पीछे सातू है। सातू आते ही अपना गिलास खाली करता है।

हिमाद्रि शशि दा, अब करीब-करीब जल चुकी है।

लड़की भरे से स्वर में
जल चुकी है ? एकदम शेष हो गयी ? एकदम शेष हो
लड़की अन्धकार में खो जाती है।

कार्तिक बोतल उठाकर
हाँ, बोतल भी शेष हो चली।

शशि उठकर
चलिए चला जाय।

कार्तिक बोतल दिखलाते हुए
सातू बाबू ?

सातू नहीं अब और नहीं।

कार्तिक शशि बाबू ?

शशि ना ।

कार्तिक हिमाद्रि ?

हिमाद्रि नहीं । चलिए, चल ।

ये तीनों कोने से गमछा उठाकर कमर में बाँधते हैं ।

कार्तिक तुम लोग आगे बढ़ो, मैं इस शेष करके आता हूँ । देर नहीं लगेगी ।

शशि हँसकर

कार्तिक बाबू शेष किये बिना और शेष देखे बिना हिलते नहीं । चलिए साधु बाबू ।

तीनों का प्रस्थान । कार्तिक हाथ का गिलास एक घूँट में खत्म करता है । बोतल में कितनी बची है, इसे अच्छी तरह देखता है । उठकर सुराही से थोड़ा पानी गिलास में डालता है । गिलास उठाकर देखता है—मानो नापकर भर रहा हो । थोड़ा-सा और पानी डालता है । खड़े होकर बड़ी सावधानी से थोड़ा सा फेंकता है । फिर बोतल की सब ह्विस्की गिलास में डालता है । लड़की पर रोशनी पड़ती है । वह बैठी कार्तिक को देख रही है ।

लड़की यह क्या कर रहे हो ?

कार्तिक बड़ी सावधानी से टेंट में एक पुड़िया निकालकर उसमें का सफेद पाउडर गिलास में डालता है । उसका हर काम जैसे पहले से निश्चित किया हुआ हो ।

लड़की यह क्या ? तुम क्या कर रहे हो ? क्या कर रहे हो ?

कार्तिक सामने की ओर मंच के बीच आ जाता है । आँख के सामने करके गिलास को धीरे धीरे हिलाता है जिससे पाउडर मिल जाय पर पानी न छलके । उसके चेहरे पर एक शांत हँसी है, जैसे अभी कोई बड़ी मजेदार बात सुनी हो ।

कार्तिक कार्तिक कम्पाउण्डर शेष किये बिना और शेष देखे बिना नहीं हिलता न ? क्या ? सब शेष हो चुका है शशि बाबू ! लीजिए, इस बार सब शेष !

लड़की क्या कह रहे हो तुम ?

कार्तिक सात साल । सात साल तक मोची अपने अन्तर को भर रहा—सात साल तक । कार्तिक कम्पाउण्डर ! सात साल प्रतीक्षा करने के बाद

तुमने सात दिन समय मागा था—वह भी नही मिला।

लडकी चौंककर खडी हो जाती है

लडकी क्या ? क्या कहा ?

कार्तिक जाने दो। अंत देख लिया, अब और कुछ देखने को नही रहा। खेल खत्म !

लडकी तुम तुम सात साल तक मुझे मेरे लिए ?

कार्तिक अत्यंत शात भाव से गिलास उठाते हुए

तारा तारा मा। चीयस !

लडकी चीत्कार करके

ना ना ना ना ना।

कार्तिक गिलास को मुह तक लाकर अचानक रुक जाता है। गरदन टेढी करके जसे कुछ सुनने की कोशिश करता है। न जाने क्या सोचता है।

लडकी चीत्कार करके

मुझे चिता पर से उतार लाओ। अभी भी जलकर राख नही हुई हूँ—अभी भी जल रही हूँ—उतार लाओ—पगला घोडा ! मुझे लौटा लाओ मुझे उतार लाओ, पगला घाडा !

लडकी अधकार मे डूबी जा रही है।

पगला घोडा ! पगला घोडा !

लडकी अधकार मे खो जाती है। केवल उसके चीत्कार की हल्की-सी ध्वनि 'पगला घोडा' गूजती रहती है। मुह के पास गिलास रखे कार्तिक जसे कुछ सुनता रहता है।

कार्तिक धीरे धीरे

जिन्दा रहने पर सब समव हो सकता है ?—सात दिन समय नही दिया—केवल सात दिन चाहा था। मैं मैं भी क्या ? तब क्या अभी शेष नही हुआ है ? जिन्दा रहने पर सब कुछ समव हो सकता है ?

कोई उत्तर नहीं देता। कार्तिक धीरे धीरे गरदन घुमाकर इधर-उधर देखता है, मानो कुछ खोज रहा हो। बाकी शरीर अभी भी स्थिर है। उसके बाद गिलास को देखता है—एक लम्बी सांस खींचता है।

तारा तारा मा !

धीरे धीरे गिलास का पानी जमीन पर गिराने लगता है।
धीरे धीरे पर्दा बंद होता है—कार्तिक तब भी पानी डालता ही रहता है।